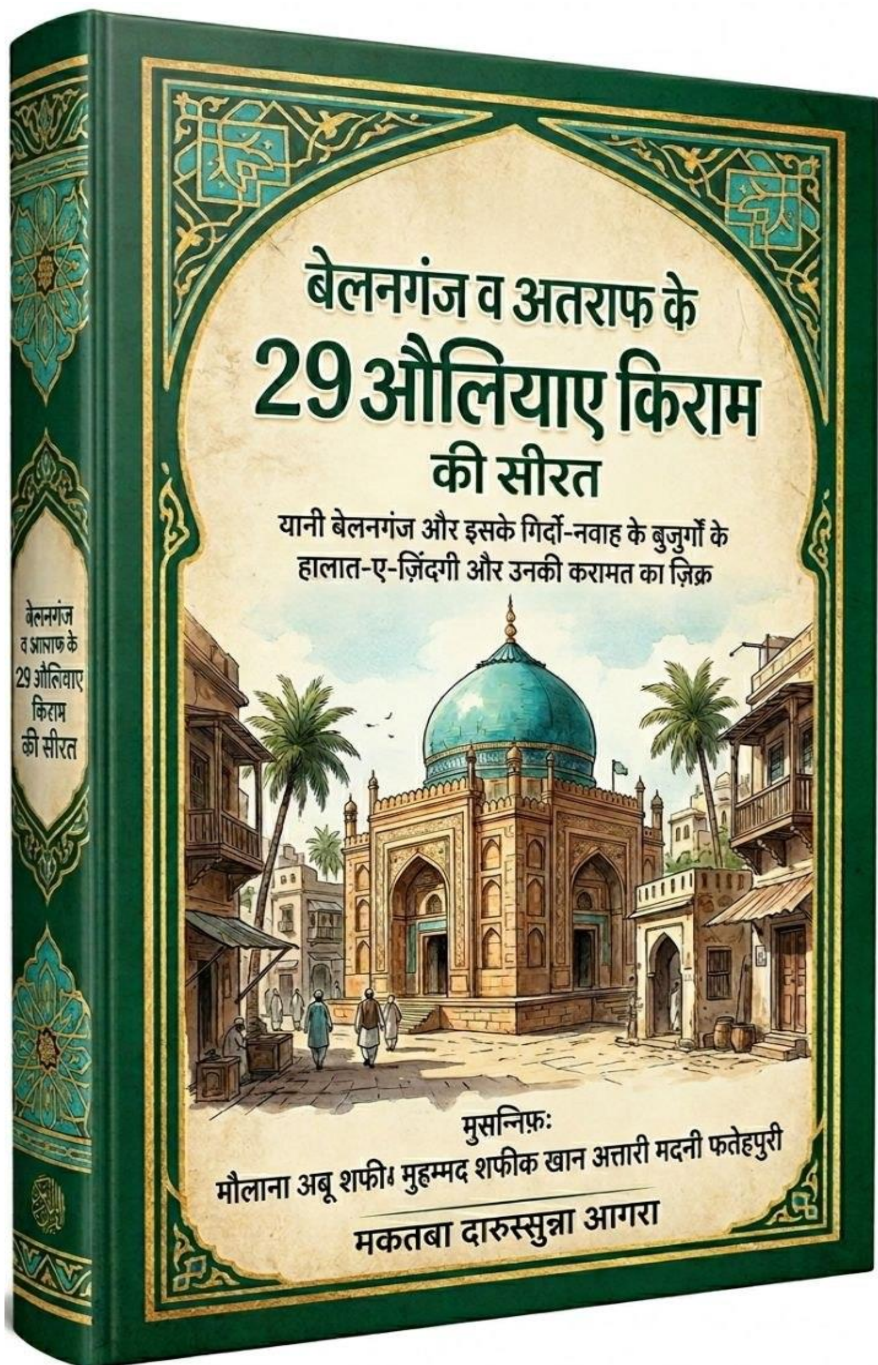
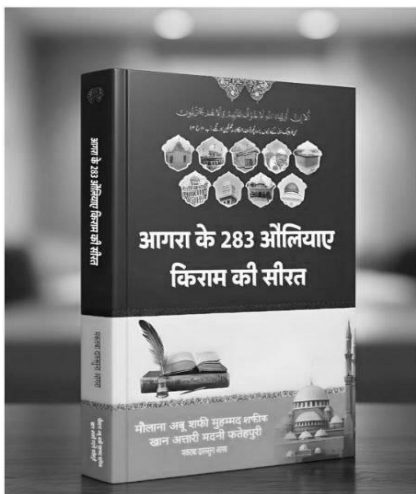
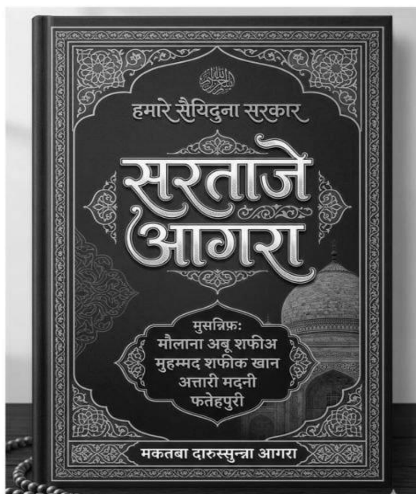
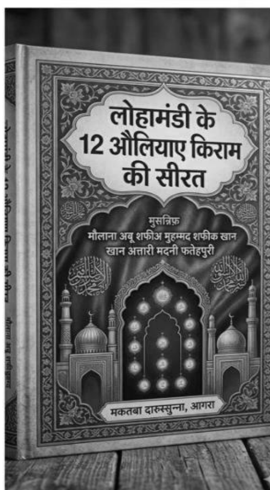
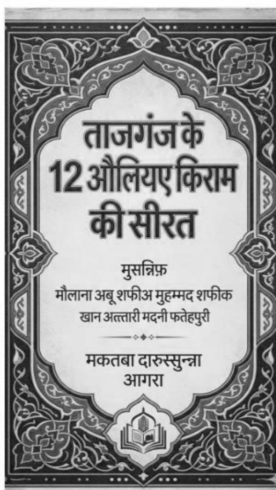

बेलनगंज व अतराफ के
29 औलियाए किराम
की सीरत
यानी बेलनगंज और इसके गिर्दो-नवाह के बुजुर्गों के
हालात-ए-ज़िंदगी और उनकी करामत का ज़िक्र
मुसन्निफ़:
मौलाना अबू शफी: मुहम्मद शफीक खान अत्तारी मदनी फतेहपुरी
मकतबा दारुस्सुन्ना आगरा

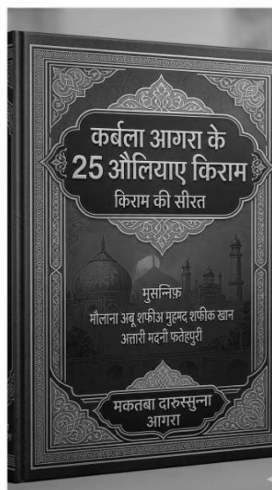
आगरा के औलियाए किराम की सीरत को आम करने में मकतबा दारुस्सुन्ना आगरा का साथ दें और शादियों, दावतों और मरहूमीन के ईसाले सवाब के लिए किताब तकसीम करवायें और औलियाए किराम के फ़ैज़ान से मालामाल हों।











किताबें हासिल करने के लिए इस नंबर पर कॉल कीजिए :8808693818

मौलाना अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक़ ख़ान अत्तारी मदनी फतेहपुरी

मुसन्निफ़ का तआरुफ़

नाम और निस्बत

नाम **मुह़म्मद शफीक़ खान**, वालिद का नाम **मुह़म्मद शरीफ खान** है, सिल्सिला क़ादरिया रज़विया अ़त्तारिया में शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिए दा'वते इस्लामी, हज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल, **मुह़म्मद इल्यास अत्तार क़ादरी** रज़वी से **2004 ईस्वी** में बैअ़त होने की वजह से अपने नाम के साथ अ़त्तारी लिखते है, आपकी विलादत क़स्बा ललौली जिला फतेहपुर हंसवा, सूबा यू पी, हिंद में हुई, आप की तारीखे पैदाइश **10 जून 1986 ईस्वी** है।

दीनी माहौल से वाबस्तगी और सफ़रे इल्म

हज़रत ने इब्तिदाअन हिंदी इंग्लिश की ता'लीम हासिल करके सन **2000 ईस्वी** में ऐ. सी. का काम सीखने और करने के लिये बम्बई चले गये थे और वहां पर **4 साल** क़ियाम किया फिर **2004 ईस्वी** में अपने वतन लौटे और वतन में ही उन्हें दा'वते इस्लामी का दीनी माहो़ल मिला, दा'वते इस्लामी के दीनी माहौल से वाबस्ता होने के बाद मुख्तलिफ कोर्सेज़ किये और **2006 ईस्वी** में अपने ही इलाके के दारुल उ़लूम बनाम **जामिया अ़रबिया गुलशने मा'सूम** कस्बा ललौली में **क़ारी इक़बाल अह़मद अ़त्तारी** से क़ुरआ़ने पाक नाज़िरा और ह़ज़रत **मौलाना अ़तीक़ुर्रह़मान मिस्बाही** से **दर्से निज़ामी** के दरजए ऊला और कुछ दरजाए सानिया की किताबें पढ़ीं, इसके बाद मज़ीद ता'लीम हासिल करने के लिये **चिरैयाकोट जिला मऊ** तशरीफ ले गये और वहां दरजए सानिया मुकम्मल करने के बाद अहले सुन्नत के अज़ीम इ़ल्मी इदारे अल

जामिअ़तुल अशरफिया मुबारकपुर आ'ज़मगढ़ में मतलूबा दरजए सालिसा का टेस्ट दिया और अल्लाह पाक के फ़ज़्ल से कामयाब होने के बाद दरजए सालिसा की तालीम वहीं हासिल की, फिर दरजए राबिआ **दारुल उ़लूम ग़ौसिया** (जो जिला **आ'ज़मगढ़ के गाँव सरय्या** में वाक़ेअ़ है) में मुकम्मल की, फिर उसके बाद दा'वते इस्लामी के जामिअ़तुल मदीना, **फैज़ाने अ़त्तार नेपालगंज**,नेपाल में दाखिला लिया और दरजए खामिसा से दौरए ह़दीस तक की ता'लीम वहीं मुकम्मल फरमाई।

तदरीसो तसनीफ़ की शुरुआत

2014 में फराग़त के बाद तदरीस के लिये दा'वते इस्लामी के जामिअ़तुल मदीना **फैज़ाने सिद्दीक़े अकबर,आगरा** तशरीफ ले गये और एक साल वहां तदरीस फरमाई, फिर मज़ीद तदरीस के लिये दा'वते इस्लामी के मदनी मरकज़ के हुक्म पर **बंगलादेश के दारुल हुकूमत ढाका** के जामिअ़तुल मदीना तशरीफ ले गये और वहीं पर दा'वते इस्लामी के जामिआ़त के दरजए सानिया में चलने वाली इ़ल्मे सर्फ की किताब बनाम **मराहुल अरवाह** की उर्दू शरह़ **शाफ़िकुल मिस्बाह** और दरजए राबिअ़ा में चलने वाली इ़ल्मे नहव की किताब बनाम **शरह जामी** की उर्दू शरह़ **अश शफीकुन नोअमानी** तसनीफ फरमाई।

उसके बाद फिर जामिअ़तुल मदीना फैज़ाने सिद्दीक़े अकबर आगरा तशरीफ लाकर दरजए सानिया में चलने वाली ह़दीस की किताब बनाम **अल अरबईने नवाविय्या** की उर्दू शरह़ **शफ़ीकिया** तह़रीर फरमाई, और तब से अब तक तस्नीफात का सिल्सिला जारी है। आखिरी मालूमात के मुताबिक अब तक कुल 65 से ज़ाइद किताबें तसनीफ़ हो चुकी हैं।

खिलाफ़तो इजाज़त

25 अप्रैल 2024 ईस्वी को शागिर्दे हाफिज़े मिल्लत, मुरीदे मुफ़्तिए आज़म हिन्द, खलिफ़ए बुरहाने मिल्लत, मुबल्लिगे इस्लाम, हज़रत **अल्लामा मौलाना अब्दुल मुबीन नोअमानी** साहिब ने सिलसिलए कादरिया, रज़्विया की **खिलाफ़तो इजाज़त** से नवाज़ा।

खिदमते दीन

हज़रत जिस तरह एक **मुदर्रिस** और **मुसन्निफ़** हैं उसी तरह **मुक़र्रिर** और **मुबल्लिग** भी हैं। आप के इस्लाही बयानात खौफे खुदा व इश्क़े मुस्तफा से लबरेज़ होते हैं। सुनने वालों पर रिक्कत तारी होती और दीन से मुहब्बत नसीब होती है। मज़ीद वक़्तन फ़वक़्तन मुख्तलिफ़ दीनी तहरीकें भी चलाते रहते हैं। अभी हाल ही में **{दीन सीखो और इनाम पाओ}** के नाम से घर घर दीनी तालीम पहुँचाने की तहरीक शुरू फरमाई है। अल्लाह पाक हज़रत की इस कोशिश को अपनी बारगाह में क़बूल फरमा कर तरक्की अता फरमाये। अमीन

अल्लाह पाक से दुआ है कि मौसूफ को बे बहा बरकातो समरात से नवाज़े और इस कारहाए नुमाया को अपनी बारगाह में शर्फे क़बूलियत अ़ता करके मौसूफ के लिये तोशए आखिरत बनाए। आमीन

अज़ : अल आजिज़ मुहम्मद शादाब खान मदनी कोटा राजस्थान

मज़ारात पर हाज़िरी का तरीक़ा

सवाल: औलियाए किराम रहमतुल्लाह अलैहिम के मज़ारात पर हाज़िरी का तरीक़ा क्या होना चाहिए ?

जवाब: किसी वली के मज़ार मुबारकपर हाज़िरी का तरीक़ा येह है कि अगर मुम्किन हो तो पायंती यानी क़दमों की तरफ़ से आए, चेहरा मुबारका की तरफ़ मुंह और काबे की तरफ़ पीठ कर के खड़ा हो, कमो बेश चार हाथ यानी दो गज़ दूर रहे, अगर कोई बिल्कुल क़रीब चला गया या ज़्यादा दूर रह गया तब भी कोई गुनाह नहीं है।

तिलावत और दीगर इबादात करने वाले को तशवीश ना हो इस लिए दर्मियानी आवाज़ में इस तरह सलाम अर्ज़ करे अस्सलामु अलैकुम या सय्यिदी यानी ऐ मेरे आक़ा! आप पर सलाम हो।

(فتاویٰ رضویہ، ۹/ ۵۲۲ماخوذ اَز رضافاؤنڈیشن مرکز الاولیالاہور)

अब एक बार सूरए फ़ातिहा, 11 मर्तबा क़ुल हुवल्लाह शरीफ़ अव्वल व आखिर तीन तीन बार दुरूदे पाक पढ़ कर ईसाले सवाब करें, ईसाले सवाब के लिए यही पढ़ना लाज़िमी नहीं है बल्कि कुछ भी पढ़ सकते हैं मिसाल के तौर पर एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ कर भी ईसाले सवाब हो सकता है बल्कि नमाज़ें, रोज़े, हज, उमरा, नेकी की दावत, इन्फ़िरादी कोशिश, रास्ते से कोई पत्थर वग़ैरा हटा दिया ताकि मुस्लमानों को तकलीफ़ ना हो, सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में शिरकत अलग़रज़ किसी भी नेक काम का ईसाले सवाब किया जा सकता है लिहाज़ा इस तरह के नेक कामों का सवाब मज़ार वाले बुज़ुर्ग की बारगाह में नज़्र कर दें, फिर वापिस होते हुए उलटे क़दमों पलटें ताकि मज़ार मुबारक को पीठ ना हो।

आगरा के औलिया का मुख़्तसर तआरुफ़

عِنْدَ ذِكْرِ الصَّالِحِيْنَ تَنَزَّلُ الرَّحْمَةُ

सालिहीन यानी नेक लोगों के ज़िक्र के वक़्त अल्लाह पाक की रहमत नाज़िल होती है।

शैख़ुल इस्लाम हज़रत अब्दुल्लाह अंसारी से मनक़ूल है कि जहां तक हो सके अल्लाह पाक के औलिया की बातें याद रखो और जो येह भी ना हो सके तो उन के नाम मुबारक ही याद रखो कि यही काफ़ी हैं।

(بوستانِ اخیار، ص۱)

हज़रत सुल्तानुल मशाइख़ शैख़ निज़ामुद्दीन औलिया रहमतुल्लाह अलैह अमीर ख़ुसरु रहमतुल्लाह अलैह से अक्सर इरशाद फ़रमाया करते थे कि : ऐ ख़ुसरु! मशाइख के मलफ़ूज़ात यानी उनकी बातों को याद करो और उनका ज़िक्र किया करो, कि उनके ज़िक्र से दिल में कैफ़ीयत पैदा होती है।

(بوستانِ اخیار، ص۱)

मौलाना सैय्यिद अब्दुल वाहिद बिलग्रामी रहमतुल्लाह अलैह साहिबे सबए सनाबिल फ़रमाते हैं : सालिहीन का ज़िक्र ग़मगीन दिलों के सुकून का सबब होता है, येह बुज़ुर्गाने दीन अगरचे हमारी ज़ाहिरी निगाहों से दूर और आलमे ख़ाक से रुख़स्त हो कर बहिश्त नशीनों के हम नशीन हैं लेकिन क़ुरआने पाक के फ़रमान से अब तक ज़िंदा हैं और क़ियामत तक ज़िंदा रहेंगे जैसा कि अल्लाह पाक ने इरशाद फ़रमाया :

وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِیْنَ قُتِلُوْا فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتًا ؕ بَلْ اَحْیَآءٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ یُرْزَقُوْنَ ﴿۱۶۹﴾

तरजमए कंज़ुल ईमान : और जो अल्लाह की राह में मारे गए हरगिज़ उन्हें मुर्दा ना ख़्याल करना बल्कि वो आपने रब के पास ज़िंदा हैं रोज़ी पाते हैं। (پ۴، آلِ عمران،۱۶۹)

लेकिन उन बुज़ुर्गाने दीन के ज़ाहिरी तौर पर इस दुनिया से चले जाने के बाद भी हम उनकी रूहों से उसी तरह फ़ैज़ हासिल कर सकते हैं जैसा कि हम उनकी दुन्यवी ज़िंदगी में फ़ैज़ हासिल करते थे, उनके मुक़द्दस तज़किरे, उन के मुबारक कलिमात (यानी उनकी बातें) हमारी हिदायत का सबब बन सकते हैं, उनके हालात को पढ़ना, लिखना, सुनना इबादत में दाख़िल और बरकत का सबब है और उनके अहकाम व हिदायत की पैरवी नजात का सबब है, उन में वही कीमियाई असर और मक़बूलियत की तासीर मौजूद है जो साहिबे कलिमात की नज़र व ज़बान में मौजूद थी, हाँ ! नियाज़ मंदी, ख़ाकसारी ज़रूरी और अक़ीदत लाज़िमी है।

अलबत्ता जहां तक मुम्किन हो औलिया अल्लाह के मज़ारात पर ख्वाहिशाते दुन्यवी को नज़र अंदाज कर के दौलत ख़ुदा शनासी के फ़ैज़ की दुआ करनी चाहिए। आगरा शहर में कई सिलसिलों के बुज़ुर्गाने दीन मौजूद जिनकी तफ़सील येह है :

ख़ानवादए चिश्तिया के बुज़ुर्गाने दीन

ख़ानवादए चिश्तिया में शाह नेअमतुल्लाह चिश्ती, मीर अब्दुल्लाह तबरेज़ी, अब्दुल मोमिन चिश्ती, शाह मुहम्मद चिश्ती, शैख़ मुहम्मदी चिश्ती, मीर मुहम्मद सालेह कशफ़ी, शैख़ मुनव्वर चिश्ती, शाह यार मुहम्मद चिश्ती, शैख़ सिधारी चिश्ती, शैख़ ज़ैनुद्दीन चिश्ती रहमतुल्लाह अलैहिम वगैरा बुज़ुर्गाने चिश्त अहले बहिश्त का तज़्किरा इस किताब में मौजूद है।

ख़ानवादए नक़्शबंदिया के बुज़ुर्गाने दीन

मशाइख़ीने नक़्शबंदिया में हज़रत शाह अबुल उला, ख़्वाजा मुहम्मद यहया, अमीर अब्दुल्लाह, मीर मुहम्मद नोअमान, ख़्वाजा मुहम्मद मीर, मुहम्मद इब्राहीम, हाफ़िज़ अब्दुल्लाह रहमतुल्लाह अलैहिम वग़ैरा।

ख़ानवादाए शत्तारिया के बुज़ुर्गाने दीन

और मशाइख़ीने शत्तारिया में शैख़ ज़ियाउल्लाह, शैख़ अब्दुल्लाह, शैख़ बुरहान रहमतुल्लाह अलैहिम वग़ैरा।

ख़ानवादए मदारिया के बुज़ुर्गाने दीन

और ख़ानवादए मदारिया में शाह फ़ख़्रुद्दीन मदारी, मलंग शाह रहमतुल्लाह अलैहिम का तज़्किरा मौजूद है।

नक़्शबंदिया पौधे में चिश्तिया शाख़ पैवंद कर के एक जदीद शजर पुर समर इस बाग़ में तैयार किया गया है जो अबुल उलाईया के नाम से मशहूरो मारुफ़ है, इस की शाख़ें दूर दूर तक फैली हुई हैं, इस सिलसिले के बानी हज़रत शाह अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह के इलावा अमीर फ़ैज़ुल उला, अमीर नूरुल उला, अमीर अब्दुल माजिद, अमीर अब्दुल मुनइम, ख़लीफ़ा अबुल क़ासिम, मुल्ला मुहम्मद उमर, सैय्यिद मुहम्मद अफ़ज़ल, सैय्यिद मुहम्मद जाफ़र, शाह फ़रहाद, शैख़ वली मुहम्मद वग़ैरा इसी फ़ल आवर दरख्त के औलियाए किबार हैं जिनका ज़िक्रे खैर भी इस किताब में मौजूद है।

इनके इलावा और भी बहुत सारे बड़े बड़े औलियाए कामिलीन रहमतुल्लाह अलैहिम का हैं जिनके सिलसिलए मारिफ़त का पता नहीं चला, या कई कई सिलसिलों में मुंसलिक हैं, शैख़ अबुल फत्ताह, मीर अबुल गैस बुख़ारी, शैख़ अबू बक्र क़ुरैशी, सैय्यिद अहमद बुख़ारी, हाफ़िज़ अहमद, शैख़ अफ़ज़ल मुहम्मद, सैय्यिद बाक़ी, शैख़ बा यज़ीद शरवानी, शैख़ बा यज़ीद ख़वेशगी, ख़्वाजा बख़्तियार, सैय्यिद बदरुद्दीन, सैय्यिद भिकारी, मीर तपां, अमीर सैय्यिद जलाल मुतावक्किल, सैय्यिद जलाल बुख़ारी, शैख़ चंदन क़ुरैशी, मौलाना शैख़ हसन शीराज़ी, शैख़ हुसैन बदखशी,

सैय्यिद हुसैन, शाह हैदर, ख़्वाजा ख़िज़र, शैख़ ख़लील, अमीर सैय्यिद दाऊद, शाह रफ़ीअ सब्ज़ पोश, मीर रफ़ीउज़्ज़मान, शैख़ सालिम, सक़ा, सैय्यिद शाह मीर, मीराँ आरिफ़ हुसैनी, शैख़ अब्दुल्लाह खटवासन, शैख़ अब्दुल्लाह बुख़ारी, शैख़ अब्दुलहकीम, ख़्वाजा अब्दुर्रऊफ़, शाह अब्दुल लतीफ़ बरी, शैख़ अबदी, शैख़ फ़तहुल्लाह, शाह फ़तह अली, शैख़ कमाल, शैख़ कमालुद्दीन हुसैन, शाह मुजाहिदुद्दीन, शैख़ मुहिब्बुल्लाह, सैय्यिद मुहम्मद बुख़ारी, शैख़ मुहम्मद ज़ाहिद, शैख़ मुहम्मद आरिफ़, मौलाना मुहम्मद आरिफ़, शैख़ महमूद, सैय्यिद मुर्शिदुद्दीन, शैख़ नाज़िर, शैख़ नसीरुद्दीन अंसारी, शाह नूरुज़्ज़मान, शैख़ वली मुहम्मद नारनौली, शाह हरे भरे, शैख़ यूसुफ़ लंक, शैख़ यूसुफ़ अंसारी, शाह अज़मतुल्लाह, शेर अली शाह, नन्हे मियां रहमतुल्लाह अलैहिम वगैरा ।

आरिफ़ा और सालिहा औरतों में से बीबी जीवनी, चांद बीबी, बीबी ख़ाकी शाह, बीबी क़ुतुबन, बीबी नबफ़शा, बेगम सुल्तान रहमतुल्लाह अलैहिन्ना मौजूद हैं।

आगरा शहर का आबाद होना

आगरा अगर्चे बहुत पुराना शहर है मगर इस्लामी ज़माने और सुल्तान सिकन्दर लोदी के ज़माने से पहले येह एक गुमनाम जगह से ज़्यादा वुक़अत नहीं रखता था, 907 हिज्री बमुताबिक़ 1501 ईस्वी में सिकन्दर लोदी ने इस को नये सिरे से आबाद कर के अपना दारुल खिलाफ़त मुक़र्रर किया, इस बादशाह की दरवेश परस्ती, इल्मी क़दरदानी और कमाल पर्वरी की बरकत से चंद ही रोज़ में येह नौ आबाद शहर मशाइख़ीने नामदार का मर्कज़ और शीराज़ व बग़दाद की तरह दारुल उलूम बन गया और सुल्तान की नेक नीय्यती, ख़ुदा दोस्ती, कमाल पर्वरी

बहुत से अहले दिल बुज़ुर्गों और अहले कमाल आदमियों को दूर दराज़ इस्लामी मुल्कों से आगरा में खींच लाई और यहां की सुकूनत का बाइस हुई।

सुल्तान सिकन्दर लोदी के ज़माने में औलिया की आमद

चुनांचे शैख़ यूसुफ़ लंक, सैय्यिद रफ़ीउद्दीन मुहद्दिस, सैय्यिद अब्दुल्लाह दानिशमंद, शैख़ यूसुफ़ अंसारी, शाह नेअमतुल्लाह चिश्ती, शैख़ बुढन शत्तारी, शैख़ चंदन क़ुरैशी, शैख़ नसीरुद्दीन तमीमी अंसारी, शैख़ अबुल फ़तह मक्की, शैख़ अबू बक्र क़ुरैशी, सैय्यिद इस्माईल क़ादरी, शैख़ अब्दुल मोमिन चिश्ती, शैख़ हसन शीराज़ी, क़ारी अब्दुल मलिक, शैख़ महमूद, सैय्यिद जाफ़र मुहद्दिस रहमतुल्लाह अलैहिम वगैरा बुज़ुर्गाने अकबराबाद सुल्तान सिकन्दर लोदी के अहद यानी ज़माने में आगरा में रौनक अफ़रोज़ हो कर आबाद हुए।

उनके बाद मुफ़्ती अबुल फ़तह, मुफ़्ती बहाउद्दीन, सैय्यिद जलाल मुतावक्किल, शैख़ जलाल अंसारी, सैय्यिद अलाउद्दीन मज्ज़ूब, हाजी इब्राहीम मुहद्दिस, शैख़ मुबारक, शैख़ ज़ैनुद्दीन, शैख़ शहाबुद्दीन मुअम्माई, मौलाना अबुल वाजिद फ़ारग़ी वगैरा बाबरी, हुमायूंनी अहद यानी ज़माने में आगरा तशरीफ़ लाए।

दसवीं सदी हिज्री के औलियाए आगरा

दसवीं सदी हिज्री के अख़ीर तक जो अहदे अकबरी का आख़िरी ज़माना था, आगरा में उलमा फुज़ला और मशाईख़ीन का ख़ूब दौर दौरा रहा और हाजी इब्राहीम मुहद्दिस, सैय्यिद बदरुद्दीन, क़ाज़ी जलालुद्दीन, क़ाज़ी नूरुल्लाह शोस्तरी, ख़्वाजा मुहम्मद यहया, शैख़ मुनव्वर चिश्ती, शैख़ आरिफ़ हुसैनी, शैख़ अब्दुल वह्हाब, मौलाना कमालुद्दीन हुसैन,

शैख़ ज़ियाउल्लाह शत्तारी, क़ारी शैख़ मुहम्मद ख़ालिदी, मौलाना मीर कलां, मौलाना मीर, क़ाज़ी नासिर, शैख़ अब्दुर्रहमान क़ादरी, अल्लामा अबुल फ़ज़्ल, शैख़ अबुल फ़ैज़ फ़ैज़ी, शैख़ अब्दुल्लाह शत्तारी, शैख़ अबुल ख़ैर रहमतुल्लाह अलैहिम वग़ैरा उलमा फुज़ला और ख़ुदा शनास आगरा में तशरीफ़ लाए या पैदा हुए।

ग्यारहवीं सदी हिज्री के औलियाए आगरा

ग्यारहवीं सदी में जो कि जहांगीर और शाहजहाँ और आलमगीर का अहदे सलतनत है, ब निस्बत दसवीं सदी के तनज़्ज़ुली के आसार नुमायां होने लगे मगर फिर भी बाज़ मशाईख़ीन के तुफ़ैल हरा भरा रहा चुनांचे हज़रत शाह अबुल उला, मीर मुहम्मद नोअमान, सैय्यिद अहमद बुख़ारी, सैय्यिद जलाल बुख़ारी, सैय्यिद बाक़ी, शैख़ इस्माईल चिश्ती, अल्लामा अफ़ज़ल ख़ां, मीर अब्दुल्लाह तबरेज़ी, सैय्यिद अब्दुल क़ादिर बुख़ारी, अमीर फ़ैज़ुल उला, शैख़ मुहम्मदी, शैख़ मुहम्मद सालेह, शैख़ नाज़िर, मुल्ला अब्दुल अज़ीज़, मुल्ला अब्दुर्रशीद रहमतुल्लाह अलैहिम वग़ैरा बड़े बड़े मशहूर औलिया अल्लाह और उलमा, फुज़ला इस सदी में भी पैदा हुए।

बारहवीं सदी हिज्री के औलियाए आगरा

बारहवीं सदी में इस्लामी सल्तनत के तनज़्ज़ुल के साथ आगरा के मशहूर औलिया में भी हैरत अंगेज़ तनज़्ज़ुल पैदा हुआ, अय्यामे तवाइफुल मुलूकी और जाटों और मराठों के ज़माने के तमाम शुरफा और मशाईख़ीन आगरा से रुख़स्त हो गए, जिस का येह नतीजा है कि तक़रीबन पूरी सदी में सिफ़र ही सिफ़र नज़र आता है, उस ज़माने से अंग्रेज़ों के ज़माने तक ऐसा तारीक यानी अंधेरा ज़माना गुज़रा कि बड़े बड़े औलिया

अल्लाह और मशाईख़ीन की ख़ानक़ाहें, दरगाहें और मज़ारात तक खुद खुदा कर खत्म हो गए या कसमपुर्सी की वजह से बेनाम व लापता हो गए, किस क़द्र अफ़सोस की बात है कि पुराने बुज़ुर्गाने दीन रहमतुल्लाह अलैहिम के मज़ारात में सिर्फ दो एक मज़ार मशहूर और चंद मज़ारात का निहायत तलाशो तहक़ीक़ात से पता चला है, शाह अब्दुल्लाह शत्तारी, शैख़ ज़ियाउल्लाह शत्तारी, मौलाना मीर कलां, शैख़ इस्माईल चिश्ती, हाजी इब्राहीम मुहद्दिस, अमीर सैय्यिद जलाल मुतावक्किल, सैय्यिद बदरुद्दीन रहमतुल्लाह अलैहिम वग़ैरा में से औलियाए किबार यानी बड़े औलियाए किराम के मज़ारात तक का पता व निशान नहीं मिलता, चंद बा फ़ैज़ व नूरानी मज़ारात मौजूद हैं, उन के मकीनों का नाम बताने वाला दुनिया में कोई नहीं मिलता।

अफ़सोस कि शैख़ मुबारक, शैख़ फ़ैज़ी, शैख़ अबुल ख़ैर वगैरा में से मशाहीर के मक़ाबिर नेस्तो नाबूद कर दिए गए और किसी को गवर्मैंट को मुतावज्जेह करना क्या मा'ना उफ़ तक करने की तौफ़ीक़ ना हुई।

जिनके नक़्शे पा को रखती थी ज़मीं सर पर ब फख्र
तुर्बुतों में ख़ाक आलूदा हैं वो आली गुहर
नाम उनका कोई अब भूले से भी लेता नहीं
जिनके दरवाज़ों पे डंका बजता था शामो सहर
ख़ाक में मर कर मिले अफ़सोस वो आली दिमाग़
अब निशाने क़ब्र भी उनके नहीं आते नज़र

सैंकड़ों मज़ारात आबादी में आ कर लापता हो गए यानी आबादी बढ़ने की वजह से मज़ारात खत्म कर दिये गये, पुराने बुज़ुर्गाने दीन की ख़ानक़ाहें अक्सर लबे जमुना यानी जमुना नदी के किनारे थीं, मुग़लिया अहदे सल्तनत यानी ज़माने में वहां अमीर लोगों ने बड़ी बड़ी आलीशान

हवेलियाँ और बाग़ात तामीर कराये, कुछ आसार यानी निशानियाँ उस ज़माने में नेस्तो नाबूद हो गए, अब उस मक़ाम यानी जगह पर गैर मुस्लिमों का मुहल्ला बेलन गंज आबाद है, जिस में ग़ालिबन एक घर भी मुसलमान का नहीं है, मुग़लिया ज़माने के अमीर लोगों की बड़ी बड़ी हवेलियों में गैर मुस्लिम साहूकार आबाद हैं, इस से आगे बढ़ कर जान साहिब मशहूर सौदागर के वसीअ कारख़ाने (फ़्लोर मिल्ज़, कॉटन मिल्ज़, बर्फ़ कारख़ाना वग़ैरा) और पानी पहुंचाने के कारख़ाने वग़ैरा बन गए हैं, दो एक मज़ार जान साहिब के कारख़ानों के अंदर अब तक मौजूद हैं, मगर साहिबे मज़ारात के नामो निशान का कुछ पता नहीं चलता, अब इस नवाह यानी अतराफ़ में हज़रत मीर रफ़ीउद्दीन मुहद्दिस और शाह फ़ख़्रुद्दीन मदारी रहमतुल्लाह अलैहिमा के दो पुराने मज़ारात मशहूरो मारूफ़ बाक़ी रह गए हैं।

तेरहवीं और चौदहवीं सदी हिज्री के औलियाए आगरा

बारहवीं सदी हिज्री की तारीकी के बाद तेरहवीं और चौदहवीं सदी हिज्री के बुज़ुर्गाने दीन नेमते ग़ैर मुतरक़्क़बा मालूम होते हैं, मौलाना ज़ियाउद्दीन बलख़ी, मौलाना अहमदी क़ादरी, मौलाना आदिल, सैय्यिद अमजद अली शाह क़ादरी, शाह मुहम्मद चिश्ती, हकीम सैय्यिद नूरुद्दीन, हकीम सैय्यिद महेर अली, शाह बेदार बख्त, हाफ़िज़ अब्दुल्लाह, मियां नज़ीर, शैख़ इमाम अली शाह, सल्लू शाह मज्ज़ूब, मिर्ज़ा अली शाह मज्ज़ूब, बब्बू शाह मज्ज़ूब, मौलवी सैय्यिद वारिस अली, हम्द शाह व मुहब्बत शाह नक़्शबंदी रहमतुल्लाह अलैहिम।

आगरा के 283 औलियाए किराम की सीरत

अल्लामा सईद अहमद मारहरवी ने **"बोस्ताने अख्यार"** नाम की किताब 116 साल पहले लिखी थी जिस को नई तरतीब और तस्हील के साथ मौलाना अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफीक ख़ान अत्तारी मदनी फतेहपुरी साहिब ने नया नाम **"आगरा के 283 औलियाए किराम की सीरत"** दे कर पेश किया है।

येह किताब महेज़ एक तस्नीफ़ नहीं बल्कि आगरा की रुहानी तारीख़ का ज़िंदा दस्तावेज़ है। आगरा के 283 औलियाए किराम की सीरत में वो पाकीज़ा हस्तियाँ जमा की गई हैं जिनकी बरकतों से आगरा की सर ज़मीन सदियों से मुनव्वर चली आ रही है।

आगरा की सर ज़मीन वो सर ज़मीन है जिसको सैकड़ों साल हिन्दुस्तान की राजधानी बनने का ऐज़ाज़ हासिल है। आपको जान कर ख़ुशी होगी कि आगरा की सर ज़मीन में :

🕌 अल्लामा इब्ने हजर अस्कलानी रहमतुल्लाह अलैह के पोते शागिर्द

🕌 अल्लामा सख़ावी रहमतुल्लाह अलैह के शागिर्द

🕌 अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती रहमतुल्लाह अलैह के शागिर्द

🕌 हज़रत बाक़ी बिल्लाह रहमतुल्लाह अलैह के खलीफ़ा

🕌 मुजद्दिदे अल्फ़े सानी रहमतुल्लाह अलैह के खलीफ़ा

🕌 मुहम्मद ग़ौस ग्वालियरी रहमतुल्लाह अलैह के बेटे

🕌 हज़रत इम्दादुल्लाह मुहाजिर मक्की रहमतुल्लाह अलैह के खलीफ़ा

🕌 अब्दुल क़ादिर बदायूनी रहमतुल्लाह अलैह के असातिज़ा

🕌 हज़रत अब्दुर्रहीम मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाह अलैह के असातिज़ा

🕌 आला हज़रत रहमतुल्लाह अलैह के पीर साहिब सैय्यिद आले रसूल मरहरवी रहमतुल्लाह अलैह के असातिज़ा

🕌 हज़रत शाहे आलम रहमतुल्लाह अलैह, कुतुबे आलम रहमतुल्लाह अलैह के औलाद

🕌 मीर सैय्यिद शरीफ जुरजानी रहमतुल्लाह अलैह की औलाद

इनके इलावा और बहुत बुलंद पाया औलियाए किराम के मज़ारात मौजूद और उनकी सीरत इस किताब में महफ़ूज़ है।

इस किताब की सबसे बड़ी ख़ूबी येह है कि 283 औलियाए किराम का जामेअ तज़्किरा मुस्तनद तारीख़ी हवालों के साथ आम फहेम मगर इल्मी और वक़ार भरे उस्लूब में पेश किया गया है, जिसे पढ़ने वाला ख़ुद को आगरा की गलियों, ख़ानक़ाहों और मज़ारात की रुहानी फ़िज़ा में महसूस करेगा।

येह किताब मुस्लमानों के लिए बाइसे फ़ख़र, तलबा और मुहक़्क़िक़ीन के लिए क़ीमती सरमाया, और हर आशिक़े औलिया के लिए लाज़िमी मुताला है।

अगर आप चाहते हैं कि आपकी नस्लें अपने औलिया को पहचानें, घरों में दीनी व रुहानी माहौल क़ाईम हो और एक नायाब तारीख़ी किताब आपके घर की ज़ीनत बने तो आज ही इस किताब को हासिल करें। यक़ीन मानिए जो एक बार पढ़ेगा, वो दूसरों को भी पढ़ने पर मजबूर कर देगा।

🌷 सदक़ए जारिया का बेहतरीन मौक़ा 🌷

ऐ आशिकाने औलिया ! आइए! अक़ाबिर व औलियए किराम की मुक़द्दस ज़िंदगी को आम करें और अपनी आख़िरत सँवारें।

📗 किताब: बोस्ताने अख्यार

🕌 मौज़ू: आगरा के 283 बुज़ुर्गों व औलियाए किराम की पाक सीरत

📖 इल्म, अमल और रूहानियत से भरपूर एक अन्मोल किताब

इस किताब को मस्जिदों में, मदरसों में, दरगाहों पर, ग़रीब मुसलमान और दीनी तलबा में इसाले सवाब के लिए तक़सीम करवा कर हमेशा का सवाब हासिल करें।

💰 तक़सीम रेट:

◈ 1 किताब — ₹350

◈ 5 किताब — ₹1750

◈ 10 किताब — ₹3500

📌 जो इल्म फैलाता है, वो सदियों तक ज़िंदा रहता है।

📌 बुज़ुर्गों की सीरत आम करना, ईमान की ताज़गी है।

👉 आज ही ऑर्डर देकर इस नेक काम में शरीक बनें।

👉 आपके नामए अमल में हमेशा सवाब जुड़ता रहेगा।

नियत करें — इल्म बाँटें — सवाब कमाएँ।

असल क़ीमत **700 रुपये** रिआयती क़ीमत **350 रुपये**

आर्डर बुक करवाने के लिए इस नंबर राबिता कीजिए

राबिता नंबर : +91 8808693818

मकतबा दारुस्सुन्ना, F 1 mewati नगला, ताजनगरी 2, आगरा

बेलनगंज (आगरा) के 30 औलियाए किराम की प्यारी सीरत

बेलन गंज

(1) मौलाना सैय्यिद रफ़ीउद्दीन सफवी मुहद्दिस अकबराबादी

आप रहमतुल्लाह अलैह हसनी हुसैनी सैय्यिद हैं और रहने वाले मौज़ा आनुक के हैं जो शीराज़ के क़रीब एक जगह है, आप रहमतुल्लाह अलैह के तमाम बाप दादा उलमा, फुज़ला, सुलहा और अतक़िया में से थे, मीर मुईनुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह साहिबे तफ़सीरे मुईनी जो मुद्दत तक रोज़ए मुक़द्दसा हुज़ूर सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुजावर रहे, आप रहमतुल्लाह अलैह के अज्दाद यानी दादाओं में से और शैख़ सफ़ीउद्दीन अब्दुर्रहमान रहमतुल्लाह अलैह के जिनकी निस्बत से उनकी औलाद सादात सफ़विया कहलाती है, आप रहमतुल्लाह अलैह के जद्दे आला हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह ने सब से पहले उलूमे माक़ूल व मन्क़ूल का ज़ख़ीरा अपने वतन के बुज़ुर्गों से हासिल किया।

इस के बाद माक़ूलात में क़ुदवतुल मुहक़्क़िक़ीन मौलाना जलालुद्दीन रवानी रहमतुल्लाह अलैह और इल्मे हदीस में शैख़ हाफ़िज़ शम्सुद्दीन मुहम्मद बिन अब्दुर्रहमान सख़ावी रहमतुल्लाह अलैह (जो कि इब्ने हजर अस्क़लानी रहमतुल्लाह अलैह के शागिर्द हैं) से कमाल का दर्जा हासिल किया।

शैख़ शम्सुद्दीन मुहम्मद बिन अब्दुर्रहमान सख़ावी रहमतुल्लाह अलैह ने आप रहमतुल्लाह अलैह के इल्मो फ़ज़्ल का शोहरा सुन कर आप रहमतुल्लाह अलैह के हाज़िर होने से पहले ही 50 किताबों से ज़्यादा की सनद लिख कर आप

रहमतुल्लाह अलैह के पास भेज दी थी उस के बाद आप रहमतुल्लाह अलैह मुहद्दिस शैख़ शम्सुद्दीन मुहम्मद बिन अब्दुर्रहमान सख़ावी रहमतुल्लाह अलैह की ख़िदमत में हाज़िर हुए और मुद्दत तक उनसे हदीस शरीफ़ सुनकर सनद हासिल की।

आप रहमतुल्लाह अलैह के वालिदे माजिद वतन से हिजरत कर के हरमैन शरीफ़ैन चले गये, आप रहमतुल्लाह अलैह भी एक अरसे तक वहां रहे, उस के बाद मुद्दत तक इराक़ और अरब में सय्याही फ़रमाते रहे, इसी सय्याहत के दौरान आप रहमतुल्लाह अलैह अरब से गुजरात और वहां से दिल्ली होते हुए आगरा में वारिद हुए।

आगरा में सुल्तान सिकन्दर लोदी की इल्मी क़दर दानी, कमाल पर्वरी और आगरा की ख़ाक ऐसी दामन गीर हुई कि सय्याही छोड़ कर जमुना के किनारे आबाद हो गए, बादशाह हद से ज़्यादा आप रहमतुल्लाह अलैह की ताज़ीमो तकरीम करता था और हमेशा "हज़रत मुक़द्दस" कह कर मुख़ातब किया करता था।

आगरा के तमाम उलमा, फुज़ला और मशाईख़ीन में आप रहमतुल्लाह अलैह मुमताज़ बल्कि सब के उस्तादो मुक़तदा समझे जाते थे, तमाम मुसलमान और हुनूद के दिलों पर आप रहमतुल्लाह अलैह का नेक असर था, वक़्त के बादशाह भी आपसे फ़तवे तलब करते और हमेशा उमूराते सल्तनत में आप रहमतुल्लाह अलैह के नेक मशवरों पर कारबन्द होते थे, सिकन्दर, इबराहीम, बाबर, हुमायूँ, शेरशाह सूरी, सलीम शाह, छः बादशाह आप रहमतुल्लाह अलैह के ज़माने में गुज़रे, तरह तरह के फ़ित्ने व फ़साद और मुल्की इन्क़िलाब इस अर्से में ज़हूर में आए, बाज़ उलमा व मशाईख़ीन एक ज़माने में मक़बूल और दूसरे ज़माने में मर्दूद हो कर हुकूमत के दुश्मन समझे गए मगर आप रहमतुल्लाह अलैह का तर्ज़े अमल ऐसा मक़बूलो पसंदीदा था कि तमाम बादशाह आप रहमतुल्लाह अलैह के मुतीअ व फ़रमांबर्दार रहे, बाबर के

हिन्दुस्तान फ़तह करने पर अक्सर इलाक़ों के हाकिम आप रहमतुल्लाह अलैह की मारिफ़त मुलाज़मते शाही हाज़िर हुए।

हुमायूँ जब दोबारा शेरशाह से शिकस्त खा कर आगरा आया तो बग़र्ज़े सलाह व मशवरा आप रहमतुल्लाह अलैह की ख़िदमत में हाज़िर हुआ, आप रहमतुल्लाह अलैह ने फ़रमाया कि जब यगाना व बेगाना का येह हाल है तो आप चंद रोज़ के वास्ते इस मुल्क से बाहर तशरीफ़ ले जाईए और क़ुदरते इलाही के मुंतज़िर रहिए कि क्या ज़ुहूर होता है।

शेरशाह के ज़माने में जब आप रहमतुल्लाह अलैह ने अपने वतन जाने का इरादा फ़रमाया तो उस ने निहायत इसरारो मिन्नत से आप रहमतुल्लाह अलैह को इस इरादे से रोके रखा, शेरशाह सूरी के बेटे सलीम शाह के वक़्त में भी आप रहमतुल्लाह अलैह मुअज़्ज़ज़ व मोहतरम रहे।

आप रहमतुल्लाह अलैह की ख़ानक़ाह मुसाफ़िर खाना और आप रहमतुल्लाह अलैह का दस्तर ख़्वान खलीली दस्तर ख़्वान था, हज़ारों उलमा, फुज़ला, ग़ुरबा, उमरा, दूर दराज़ मुल्कों से आ आकर आप रहमतुल्लाह अलैह की ख़ानक़ाह में फ़ैज़याब होते और आप रहमतुल्लाह अलैह की सख़ावतो दरिया दिली से अक्सर आप रहमतुल्लाह अलैह ही के मोहल्ले में आबाद हो जाते थे, अगरचे आप रहमतुल्लाह अलैह दुनियवी कारोबार से तअल्लुक़ रखते थे मगर जो कुछ हासिल होता था सब मसारिफे ख़ैर ख़ुसूसन मुसाफ़िरों, ग़रीबों और तालिबे इल्मों की परवरिश में सर्फ कर देते थे, तमाम उम्र आप रहमतुल्लाह अलैह की ख़ानक़ाह में दर्सो तदरीस ख़ुसूसन इल्मे हदीस का चर्चा रहा और आप रहमतुल्लाह अलैह के हज़ारों शागिर्द कमाल के दर्जे पर पहुंचे, शैख़ मुबारक जो कि अबुल फ़ज़्ल के वालिद हैं जब मुसाफ़िराना तौर से आगरा में आये तो पहले आप रहमतुल्लाह अलैह ही की ख़ानक़ाह में ठहरे थे और फिर आप रहमतुल्लाह

अलैह ही के मोहल्ले में आबाद हुए, आप रहमतुल्लाह अलैह हमेशा नाज़ुक हालतों में उनकी मदद फ़रमाते रहे।

954 हिजरी में आप रहमतुल्लाह अलैह आलमे नासूत को छोड़ कर आलमे मलकूत की सैर को रवाना हो गए यानी आप रहमतुल्लाह अलैह की वफ़ात हो गई :

"पेशवाए यक़ीं रफ़ीउद्दीन साहिबे रिफ़अत ज़माना", वफ़ात की तारीख है।

मज़हरे ख़ालिक़े ज़मानो ज़मीं
शाह दुनिया व दीं रफ़ीउद्दीन
सफवी बूद आँ ख़ुदा आगाह
तय्यिबुल्लाह रूहु हू व सराह
साल नक़लश चू दर शुमार आमद
ना सद व पंजाह व चहार आमद

जिस जगह आप रहमतुल्लाह अलैह की ख़ानक़ाह थी वहीं आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** वाक़ेअ और ज़ियारत गाह ख़ासो आम है, शाहजहाँ के वक़्त में ख़ानक़ाह के आस पास आसिफ़ ख़ान की आलीशान हवेली तामीर हुई जिसमें बावन चौक और छप्पन फाटक थे।

अब ना मीर रफ़ीउद्दीन रहमतुल्लाह अलैह का मुहल्ला रहा, ना हवेली रही, ना हवेली वाले, सिर्फ़ चंद आसार, एक फाटक यादगार रह गया है जहां सैंकड़ों हज़ारों मुसलमानों बीसियों उलमा, फ़ुज़ला के घर थे वहां अब एक मुसलमान भी आबाद नहीं, क़ुरबो जवार में बनिए और दीगर ग़ैर मुस्लिम आबाद और मुहल्ला बेलनगंज के नाम से मशहूर है, दर्मियान में मुख़्तसर क़ब्रिस्तान यादगार के तौर पर बाक़ी रह गया है जिससे पता चलता है कि यहां मुसलमान रहते थे और इस क़ब्रिस्तान में बड़े बड़े मर्दाने ख़ुदा और

अहलुल्लाह आराम फरमा हैं, येह भी निहायत कसमा पुरसी के आलम में मुसलमानों के दौर का नौहा पढ़ रहा है।

हज़रत मीर रफ़ीउद्दीन रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** एक वसीअ व संगीन गुंबद के अंदर था जिसका ऊपर वाला हिस्सा गिर गया है, आप रहमतुल्लाह अलैह के साहिब ज़ादे मीर मुर्शिदुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह की सीरत इस किताब में मौजूद है। (बोस्ताने अख्यार, पेज76.79)

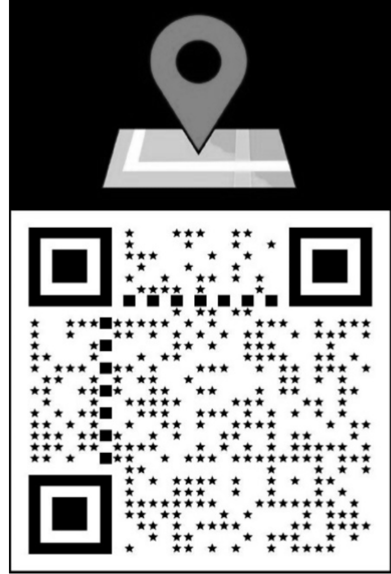
मौजूदा हालत 2025

हज़रत मौलाना सैय्यिद रफ़ीउद्दीन सफ़्वी मुहद्दिस अकबराबादी रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक बेलन गंज में अब भी मौजूद है जो कि आबादी के अंदर गली से हो कर जाना पड़ता है। मज़ार मुबारक निहायत सादा, मज़ार मुबारक के चारों तरफ़ बारह पिलरों पर क़ाइम कुछ इमारत है जिस पर गुंबद तामीर होना था लेकिन नहीं हो सका।

जिस भाई के साथ सगे अत्तार आप रहमतुल्लाह अलैह की बारगाह में गया था उन्होंने बताया कि कई बादशाहों ने मज़ार पर गुंबद बनवाने का इरादा किया लेकिन आप रहमतुल्लाह अलैह किसी को बिशारत देकर मना फ़रमा देते। वल्लाहु आलम

मज़ार मुबारक के इहाते में कई और मज़ारात हैं लेकिन उन पर कोई तख़्ती नहीं। मज़ीद मुत्तसिल छोटा सा क़ब्रिस्तान भी है जिसमें बाज़ क़ब्रें ज़ाहिर और बाज़ ज़मीन से मिल चुकी हैं।

मौलाना सैय्यिद रफीउद्दीन सफ़्वी मुहद्दिस अकबराबादी रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार की **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए, आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।



(2) सैय्यिद मुर्शिदुद्दीन

आप रहमतुल्लाह अलैह मीर रफ़ीउद्दीन सफवी मुहद्दिस अकबराबादी रहमतुल्लाह अलैह के फ़र्ज़ंद रशीद यानी बेटे हैं, तमाम उलूमे ज़ाहिरी व बातिनी में अपने वालिदे बुज़ुर्गवार रहमतुल्लाह अलैह के शागिर्द और सूफिया के तमाम औसाफो अख्लाक़ बिलखुसूस सीरतो सख़ावत और ईसार के साथ मौसूफ़ थे और ज़ाहिरी व बातिनी तसर्रुफ़ात में कमाल का दर्जा रखते थे, आप रहमतुल्लाह अलैह अपने वालिदे माजिद रहमतुल्लाह अलैह के पहलू में सो रहे हैं यानी आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** बेलनगंज में मौजूद है।

(बोस्ताने अख्यार, पेज208.209)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह मीर रफ़ीउद्दीन सफवी मुहद्दिस अकबराबादी रहमतुल्लाह अलैह के पहलू में अब भी मौजूद है।

(3) सैय्यिद शाह मीर शीराज़ी

आप रहमतुल्लाह अलैह सैय्यिद मुहम्मद इब्ने मीर मुईनुद्दीन हसनी शीराज़ी रहमतुल्लाह अलैह के फ़र्ज़ंदे दिलबन्द यानी बेटे और चार वास्ते से मीर सैय्यिद शरीफ़ जुरजानी रहमतुल्लाह अलैह से जा मिलते हैं।

मीर रफीउद्दीन मुहद्दिस रहमतुल्लाह अलैह के भतीजे और उन्ही के मोहल्ले में रहते थे,सिकन्दर लोदी के अख़ीर ज़माने में आप रहमतुल्लाह अलैह गुजरात के रास्ते से आगरा में तशरीफ़ लाए, शैख़ अमानुल्लाह पानीपती रहमतुल्लाह अलैहकी मुलाज़िमत से तरीक़त का हिस्सा मिला था, ख़ुश सोहबत, नेक सीरत और नज़्म व नसर के साथ आरास्ता और हुक्कामे वक़्त के इख़्तिलात में सरगर्म थे।

4 शव्वाल 996 हिजरी को आप रहमतुल्लाह अलैह ने वफ़ात पाई, **मज़ार मुबारक** ग़ालिबन क़ब्रिस्तान मीर रफ़ीउद्दीन रहमतुल्लाह अलैह बेलनगंज में है।

जिस जगह मीर रफ़ीउद्दीन रहमतुल्लाह अलैह की ख़ानक़ाह थी वहीं मीर रफ़ीउद्दीन रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक वाक़ेअ और उसी जगह क़ब्रिस्तान है शाहजहाँ बादशाह के वक़्त में ख़ानक़ाह के आस पास आसिफ़ ख़ान की आलीशान हवेली तामीर हुई जिसमें बावन चौक और छप्पन फाटक थे।

अब ना मीर रफ़ीउद्दीन रहमतुल्लाह अलैह का मुहल्ला रहा, ना हवेली रही, ना हवेली वाले, सिर्फ़ चंद आसार, एक फाटक यादगार रह गया है जहां सैंकड़ों हज़ारों मुसलमानों, बीसियों उलमा, फुज़ला के घर थे वहां अब एक मुसलमान भी आबाद नहीं, अब येह अलाका मुहल्ला बेलनगंज के नाम से मशहूर है, बीच में मुख़्तसर क़ब्रिस्तान यादगार के तौर पर बाक़ी रह गया है जिससे पता चलता है कि यहां मुसलमान रहते थे और इस क़ब्रिस्तान में बड़े बड़े मर्दाने ख़ुदा और अहलुल्लाह आराम फरमा हैं, येह भी निहायत कसमा

पुरसी के आलम में मुसलमानों के दौर का नौहा पढ़ रहा है काश आगरा के मुसलमान इस की तरफ़ मुतवज्जेह हों और उसे पाक व साफ़ रखें। (बोस्ताने अख्यार, पेज87.88)

(4) सैय्यिद मुनव्वर मज्ज़ूब

आप रहमतुल्लाह अलैह अकबर बादशाह के ज़माने के एक साहिबे कमाल और साकित मज्ज़ूब थे, सैकड़ों ख़ासो आम लोग आप रहमतुल्लाह अलैह के गिरवीदए अक़ीदत और हल्क़ा ब गोश थे, बहुत से लोग आप रहमतुल्लाह अलैह से फ़ैज़याब हुए, **मज़ार मुबारक** बेलनगंज के क़ब्रिस्तान दरगाह मीर रफ़ीउद्दीन मुहद्दिस रहमतुल्लाह अलैह में वाक़ेअ है।

(बोस्ताने अख्यार, पेज215)

(5) शैख़ यूसुफ़ लिंक

आप रहमतुल्लाह अलैह शैख़ दाऊद मुल्तानी के फ़र्ज़ंदे रशीद और आगरा के निहायत पुराने और मशहूर औलिया अल्लाह से हैं, शैख़ जलाल थानेसरी रहमतुल्लाह अलैह के मुरीद थे, आप रहमतुल्लाह अलैह का दिल तहक़ीक़ के नूर से मुनव्वर और आप रहमतुल्लाह अलैह का दिमाग़ नूरे तौहीद से आरास्ता था, इल्मे तसव्वुफ़ की मुश्किलात को निहायत फ़सीहुल बयानी से हल फ़रमाया करते थे, सादगी और ख़ाकसारी को निहायत ख़ूबी के साथ फ़राहम किया था।

अपने घर की ज़रूरियात ख़ुद बाज़ार में ख़रीदने जाया करते थे, अक्सर रास्ते में लड़के शोख़ी व तमस्ख़ुर से पेश आते मगर आप रहमतुल्लाह अलैह मुस्कुराते हुए निकल जाते और कभी पेशानी पर शिकन नहीं आने देते थे।

हज़रत मीर रफ़ीउद्दीन मुहद्दिस अकबराबादी रहमतुल्लाह अलैह से मन्क़ूल है कि आप रहमतुल्लाह अलैह की मुलाज़िमत यानी सोहबत में ख़ास तासीर हासिल थी, आप रहमतुल्लाह अलैह की वफ़ात के वक़्त जो अस्हाब हाज़िर थे उन में से बाज़ ने आप रहमतुल्लाह अलैह के मोअतक़िदीन के हालात की निस्बत दरयाफ्त किया यानी पूछा तो हर एक के बारे में एक जुदागाना इनायत फ़रमाई जब मेरी नौबत आई तो फ़रमाया :

اَلسَّابِقُوْنَ السَّابِقُوْنَ أُوْلَٰٓئِكَ الْمُقَرَّبُوْنَ

(जो आगे हैं येह आगे ही हैं, येह ही मुक़र्रब हैं) मैंने अभी इस इल्तिफ़ात के इसरार पर आगाही नहीं पाई लेकिन उम्मीदवार हूँ कि आप रहमतुल्लाह अलैह के मुअस्सर बयान और फ़ैज़ बख्श मुलाज़िमत की बरकत से दुन्यवी और उखरवी फ़लाह को इंशाअल्लाह ज़रूर पहुँचूगा। (ख़ुदावंदे क़दीर के फ़ज़्ल व करम से उम्मीदे क़वी है कि पहुंच गए)।

मज़ार मुबारक बेलन गंज के क़ब्रिस्तान मीर रफ़ीउद्दीन रहमतुल्लाह अलैह के रौज़े के पहलू में वाक़ेअ मगर अब ग़ैर मारूफ़ है।

(बोस्ताने अख्यार, पेज253)

(6) मीरज़ा ऐज़द बख़्श रसा

आप रहमतुल्लाह अलैह जहांगीर बादशाह के वज़ीर मीर जाफ़र आसिफ़ ख़ां के पोते हैं, तमाम उलूमो फ़ुनून में शोहरए आफ़ाक़ और फ़साहत व बलाग़त और इंशा पर्दाज़ी में यगाँना ए अस्र गिने जाते थे, आलमगीर बादशाह के ज़माने में मीर मुंशी के ओहदे पर सरफ़राज़ थे, फ़र्ख़मीर ने 1124 हिजरी में महज़ इस क़ुसूर में कि उस के बाप शाहज़ादा अज़ीमुश्शान की निस्बत कोई सख़्त कलिमा आपकी ज़बान से निकल गया था आप रहमतुल्लाह अलैह को शहीद करा दिया।

आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** हवेली ऐज़द बख्श में जो अब मुहल्ला बेलनगंज में रेट साहिब की कोठी के नाम से मौसूम है वाक़ेअ है, 1849 ईस्वी तक आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार का तावीज़ मौजूद था। (बोस्ताने अख्यार, पेज52)

मुहल्ला ड्योढ़ी बेगम (माई थान)

(7) शैख़ मुनव्वर चिश्ती

आप रहमतुल्लाह अलैह शैख़ नूरुल्लाह इब्ने क़ाज़ी मुइज़्ज़ुद्दीन इब्ने क़ाज़ी अल हद्दाद इब्ने क़ाज़ी मुहम्मद शरई रहमतुल्लाह अलैह के फ़र्ज़ंदे रशीद यानी बेटे हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह के चौथे दादा क़ाज़ी मुहम्मद शरई रहमतुल्लाह अलैह तूरान से हिन्दुस्तान में तशरीफ़ ला कर क़स्बा झुमरादत सरकार मेवात में सुकूनत पज़ीर हुए थे, चूँकि आप रहमतुल्लाह अलैह निहायत नेक किरदार और रास्त गुफ़्तार बुज़ुर्ग थे लिहाज़ा क़स्बे वालों ने मुत्तफ़िक़ हो कर निहायत इसरार से आप रहमतुल्लाह अलैह को अपना क़ाज़ी बना लिया था, उस वक़्त से क़ज़ा का ओहदा नसलन बाद नसलिन इस ख़ानदान में चला आता था।

शैख़ मुनव्वर रहमतुल्लाह अलैह के वलीयुल्लाह होने की निशानियां बचपन के ज़माने ही से नुमायां यानी ज़ाहिर थीं चुनांचे आप रहमतुल्लाह अलैह होश सँभालते ही जज़्बे इलाही में महवो बेखुद हो कर पीर रौशन ज़मीर की तलाश में सरगर्दां फिरने लगे, जहां किसी दरवेश का नाम सुना फ़ौरन उस की मुलाज़िमत में हाज़िर हो कर रूहानी फ़ैज़ हासिल किया, उन्ही दिनों में एक दिन आप रहमतुल्लाह अलैह को आलमे ख़्वाब में एक दिलकुशा मैदान नज़र आया जिसमें एक मज़ार बना हुआ था, चाहते थे कि उस मज़ार मुबारक को

बोसा दें, यकायक उस मज़ार में से एक हाथ ज़ाहिर हुआ, आप रहमतुल्लाह अलैह ने फ़ौरन पीरों की तरह उस से मुसाफ़ा किया।

जब वो हाथ ग़ायब हो गया तो आप रहमतुल्लाह अलैह ने मुजावरों से साहिबे मज़ार का नाम दरयाफ्त किया यानी पूछा, तो मालूम हुआ कि वो मज़ार ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती अजमेरी रहमतुल्लाह अलैह का है, नाम सुनते ही दिल बाग़ बाग़ हो गया और ख्वाब से चौंक पड़े, सुब्ह होते ही अजमेर शरीफ़ की तरफ़ कूच किया, रास्ते में ब मक़ाम नागौर हज़रत ख़्वाजा ख़ानूं ग्वालियरी रहमतुल्लाह अलैह की ख़िदमत में नियाज़ हासिल हुआ, पहले ही दीदार में आप रहमतुल्लाह अलैह ने गिरविदए ऐअतिक़ाद हो कर ख़्वाजा साहिब रहमतुल्लाह अलैह से बैअत करने का मुसम्मम इरादा कर लिया, अभी येह इरादा दिल से आलमे गुफ़्तार यानी ज़बान में ना आया था कि ज़मीर शनास ख़्वाजा खानूं रहमतुल्लाह अलैह ने फ़रमाया : मुनव्वर मैंने तुमको अपनी बैअत में क़बूल कर लिया, अब दस्त बोसी की कोई ज़रूरत नहीं है पहले ही दस्त बोसी की दौलत से कामयाब हो चुके हो। येह लगती हुई बात सुनकर और ज़्यादा ऐअतिक़ाद बढ़ा और ख़्वाजा ख़ानूं के साथ हो लिए।

मुद्दत तक साथ साथ रहे और कमालाते बातिनी का ज़ख़ीरा हासिल करते रहे, नागौर से चंदेरी और चंदेरी से ग्वालियर साथ आए, आख़िरे कार ग्वालियर में खिरक़ए ख़िलाफ़त मर्हमत फरमा कर अपने साथ आगरा में लाए, हज़रते ख़्वाजा ख़ानूं ग्वालियरी रहमतुल्लाह अलैह ने फ़रमाया: अब यहीं अपना तकिया बना कर बैठे रहो, चुनांचे आप रहमतुल्लाह अलैह मुर्शिदे बुज़ुर्गवार रहमतुल्लाह अलैह के हुक्म के मुताबिक़ वफ़ात तक आगरा ही में मुक़ीम रहे।

27 ज़िलक़ादा 970 हिजरी को आप रहमतुल्लाह अलैह ने विसाल फ़रमाया और उसी जगह अब भी आप रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक मौजूद है।

मन्क़ूल है कि एक दिन अदहम ख़ां शैख़ जुनैद मुफ़्ती रहमतुल्लाह अलैह के साथ आपकी ज़ियारत के वास्ते हाज़िर हुआ और देर तक खड़ा रहा, जब देर हुई तो मुफ़्ती जुनैद रहमतुल्लाह अलैह ने अर्ज़ किया कि अदहम ख़ां हुज़ूर की ख़िदमत में हाज़िर है, आप रहमतुल्लाह अलैह ने जवाब दिया कि बैठ क्यों नहीं जाता, उस ने बैठने से पहले नज़र पेश की, आप रहमतुल्लाह अलैह ने फ़रमाया: कि मुझे इस की ख़्वाहिश नहीं, शहर में जो लोग इस के ख़्वाहिशमंद हों उन्हें तक़सीम कर दो।

इस के बाद अदहम ख़ां ने दुआ के वास्ते अर्ज़ किया, आप रहमतुल्लाह अलैह ख़ामोश हो गए, अदहम ख़ां परेशान हाल हो कर वापस आ गया, जब उस के जाने के बाद हम नशीनों ने दुआ ना करने की वजह दरयाफ्त की तो आप रहमतुल्लाह अलैहने फ़रमाया कि इस के सर में फ़रमां रवाई का सौदाए ख़ाम भरा हुआ है मगर उस के तन पर सर नहीं है, चंद ही दिन बाद इस पेशनगोई का इज़्हार हो गया और अदहम ख़ां को अकबर बादशाह ने क़िले से गिरा कर मरवा डाला।

आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** मुहल्ला ड्योढ़ी बेगम (माई थान) में एक गुंबद के नीचे वाक़ेअ है, शैख़ ज़ैनुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह आप रहमतुल्लाह अलैह के फ़र्ज़ंदे रशीद यानी बेटे हैं, जिनका मज़ार भी आप रहमतुल्लाह अलैह के पहलू में बना हुआ है। (बोस्ताने अख्यार, पेज213.215)

मौजूदा हालत 2025

हज़रत शैख़ मुनव्वर चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक पाए चौकी के मुहल्ला माई थान डेयोढ़ी बेगम में मौजूद है जो कि लोगों में गुंबद वाली दरगाह से मशहूर है।

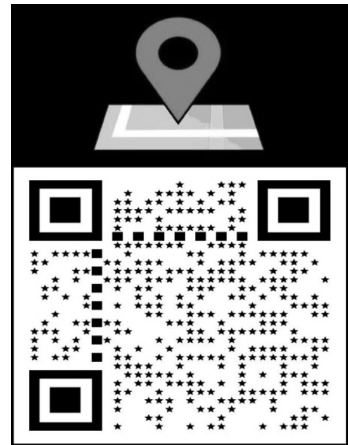
आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक के आस पास और कई मज़ारात थे जो घरों के अंदर आ चुके हैं। दो मज़ार आप रहमतुल्लाह अलैह के सर की

जानिब हैं और एक मज़ार आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार के दरवाज़े से पहले है, लेकिन किसी में कोई तख़्ती वग़ैरा नहीं लगी। आप रहमतुल्लाह अलैह के शहज़ादे हज़रत शैख़ जैनुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार भी आप रहमतुल्लाह अलैह के पहलू में मौजूद है मगर कौन सा है इस की पहचान नहीं हो पाई, हो सकता है जो मज़ार दरवाज़े से पहले है वही मज़ार आप रहमतुल्लाह अलैह के शहज़ादे का हो, वल्लाह।

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार की तख़्ती पर जो तारीख़ लिखी हुई है वो 28 सफ़र 997 हिजरी है जबकि बोस्ताने अख्यार में 27 ज़िलक़ादा 970 हिजरी लिखी है।

मज़ार मुबारक के चारों तरफ़ स्टील की रेलिंग लगी है और आप रहमतुल्लाह अलैह का उर्स मुबारक 27,28 ज़िलक़ादा को शानो शौकत के साथ मनाया जाता है।

शैख मुनव्वर चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार की **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए, आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।



(8) शैख़ ज़ैनुद्दीन

आप रहमतुल्लाह अलैह शैख़ मुनव्वर रहमतुल्लाह अलैह के फ़र्ज़ंदे रशीद यानी बेटे हैं, उलूमे रस्मी की तहसील क़ाज़ी जलालुद्दीन मुल्तानी रहमतुल्लाह अलैह के

मदरसे में की, उलूमे बातिनी का फ़ैज़ अपने वालिद बुज़ुर्गवार रहमतुल्लाह अलैह से पाया, बाप की पैरवी का ख़्याल आप रहमतुल्लाह अलैह के सर में भरा हुआ था और हमेशा बाप के क़दम बा क़दम चलने के सिवा कभी एक क़दम नहीं रखा।

'ضَمِنَ اللّٰهُ رِزْقَ كُلِّ اَحَدٍ'

(यानी अल्लाह पाक हर एक के रिज़्क़ का ज़ामिन है) की बरकत से आप रहमतुल्लाह अलैह का दिल ग़नी था और तवक्कुल आप रहमतुल्लाह अलैह का बहुत बढ़ा हुआ था, तमाम उम्र किसी दौलतमंद के दौलत ख़ाने पर जाने का इत्तिफ़ाक़ नहीं हुआ, उमूमन मुसाफ़िरों और दरवेशों की ख़िदमत में मसरूफ़ रहते थे।

7 रमज़ान 1005 हिज्री या 20 रमज़ान 1006 हिज्री को आप रहमतुल्लाह अलैह आख़िरत का सफ़र फ़रमाया और मुहल्ला डेयुढ़ी बेगम (माई थान) में अपने वालिदे माजिद शैख मुनव्वर चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह के क़रीब आराम फरमा हैं यानी आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** मौजूद है।

(बोस्ताने अख्यार, पेज81.82)

मौजूदा हालत 2025

हो सकता है आप रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक वही हो जो आप रहमतुल्लाह अलैह के वालिदे मोहतरम रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार से पहले दरवाज़े के पास बना हुआ है।

चिड़ीमार टोला

(9) शाह राफ़ेअ

आप रहमतुल्लाह अलैह आगरा के पुराने बुज़ुर्गों में से हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह के कमालात की अक्सर रिवायतें लोगों की ज़बानों पर हैं, **मज़ार मुबारक** चिड़ीमार टोला में छत्ता के अंदर वाक़ेअ है।

(बोस्ताने अख़्यार, पेज76)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर अभी जाना नहीं हुआ, इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।

(10) बीबी क़ुतुबन

आप रहमतुल्लाह अलैहा आरिफ़ बिल्लाह और ख़ानदाने क़ादरिया में मुरीद थीं, यूसुफ़ अली शाह चिश्ती साबरी रहमतुल्लाह अलैह की अहलिया यानी बीवी और क़ौम की मुग़लानी थीं, जुमा के दिन 5 ज़िलक़ादा 1279 हिजरी को आप रहमतुल्लाह अलैहा ने वफ़ात पाई।

मज़ार मुबारक मुहल्ला चिड़ीमार टोला में मस्जिद यूसुफ़ शाह के इहाते में वाक़ेअ है, मज़ार मुबारक की तख़्ती पर बिस्मिल्लाह और कलिमए तय्यिबा के नीचे येह इबारत लिखी हुई है :

''बीबी क़ुतुबन क़ौम मुग़लानी दर तरीक़ा ए क़ादरिया अहले ख़ाना फ़क़ीर, यूसुफ़ अली शाह साबरी चिश्ती बीबी मौसूफ़ा अहले दिल मुहब्बत अज़ पीराने उज़्ज़ाम बदरजा कमाल व दर रोज़ा व नमाज़ दर राह परवरदिगार अज़ जानो दिल निसार उम्र शस्त दो साल ब तारीख़

पंजुम, माह ज़िलक़ादा 1279 हिजरी अल क़ुदसी यौमे जुमा वक़्ते नमाज़े फ़ज्र जां बहक़ तस्लीम कर्द व बाद नमाज़े जुमा मदफ़ून शुदन्द, इलाही आफ़ियत ब ख़ैर बाद आमीन"

(बोस्ताने अख्यार, पेज140.141)

(11) यूसुफ़ अली शाह चिश्ती साबरी

मशहूर है कि आप रहमतुल्लाह अलैह अस्ल में फ़्रांसीसी यानी फ्रांस के रहने वाले थे और तस्लीस परस्ती को छोड़कर तौहीद परस्त हुए थे, फिर किसी बुज़ुर्ग के फ़ैज़े सोहबत से आरिफे कामिल हो कर औलिया के ज़ुमरे में शामिल हुए।

मुहल्ला चिड़ीमार टोला में आप रहमतुल्लाह अलैह की तामीर कराई हुई आलीशान मस्जिद मौजूद है जो मस्जिद यूसुफ़ शाह के नाम से मौसूम और ज़ेरे ऐहतिमाम कमेटी लोकल एजेंटी है, मस्जिद के इहाते के अंदर शुमाली यानी उत्तर की जानिब आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** है, जिस के तावीज़ पर काले पत्थर का क़दम शरीफ़ नसब है और येह शेअर लिखा हुआ है :

बर ज़मीन कि निशान कफ़े पाए तू बुवद
सालहा सज्दा साहिबे नज़रां ख़्वाहद बुवद

1279 हिजरी के बाद आप रहमतुल्लाह अलैह रेहलत फ़रमा कर आलमे बक़ा हुए। (बोस्ताने अख्यार, पेज254.255)

फल्पस गंज

(12) सैय्यिद ज़ैनुल आबिदीन शहीद

आप रहमतुल्लाह अलैह सैय्यिद, सही हुन्नसब और अकबराबाद के शहीदों में से हैं, 1190 हिज्री ब मुताबिक़ 1776 ईस्वी में ब मक़ाम हरका

शहीद हुए, **मज़ार मुबारक** फल्पस गंज के अंदर गोशा शुमाल यानी उत्तर और मशरिक़ यानी पूरब में मस्जिद से मुत्तसिल है मज़ार के तावीज़ पर येह तारीख़ लिखी हुई है :

सर गिरोहे फ़िर्क़ा ए सादात ज़ैनुल आबिदीन
आं कि बूदा शमअ जानश रौशन नूरे यक़ीं
आसमाने नजमे ईमां ख़ास अहफ़ादे बतूल
बंदए शाह शहीदो रौशनिये नर्म दीं
शुद चू बा कुफ़्फ़ार हरका अरसए अराए नबर्द
ज़द दर आं साअत यके बे दीं तफ़नगी अज़ यमीं
खुरदन ज़ख़मश हमाँ व जां बहक़ दादन हमाँ
शुद दिले आलम अज़ीं मातम ब सद हसरत क़रीं
साले तारीख़श चू हातिफ़े ऊ सरे बागे जिनाँ
गुफ़्त बादा मस्कने ऊ क़स्रे फ़िरदौसे बरीं

(बोस्ताने अख्यार, पेज82)

(13) सैय्यिद कल्लन शहीद

आप रहमतुल्लाह अलैह शुहदाए आली मक़ाम में से हैं, **मज़ार मुबारक** कचहरी घाट में पक्की सड़क के किनारे पेश दरवाज़े शुमाली यानी उत्तरी फल्पस गंज वाक़ेअ है। (बोस्ताने अख्यार, पेज81.82)

जीवनी मंडी आगरा मिल

(14) शाह फ़खरुद्दीन मदारी

आप रहमतुल्लाह अलैह शैख़ दाऊद इब्ने शाह सिद्दीक़ी के फ़र्ज़ंद रशीद यानी बेटे हैं। इब्तिदाए हाल में सिपहगरी का पेशा करते थे यानी बादशाह की फ़ौज में सिपाही थे। अक्सर उलूमे मुतादावला हुसामुल औलिया शैख़

हुसामुद्दीन मुल्तानी रहमतुल्लाह अलैह के दर्स से हासिल कर के शैख़ुल हद्दाद, सालेह चिश्ती सरहिंदी रहमतुल्लाह अलैह के मुरीद हुए। एक रोज़ जबकि आप रहमतुल्लाह अलैह मुमालिक शर्क़ी में सिपाहियाना हालत रखते और हौज़ पर वुज़ू फरमा रहे थे कि यकायक मश्की घोड़े का एक सवार निक़ाब डाले हुए उधर से गुज़रा और आप रहमतुल्लाह अलैह के पीठ पर ज़ोर से एक कोड़ा मार कर अरदली में साथ ले लिया। चंद क़दम चल कर सवार तो नज़र से ग़ायब हो गया और आप रहमतुल्लाह अलैह को ऐसे जज़्बा का सैलाब आया जिसके अंदर मआश का होश बह गया और ऐसी हैरत पैदा हुई जिसने ज़बान बंद कर दी, यहां तक कि बारह साल तक आप रहमतुल्लाह अलैह की ज़बान हुरूफ़ के अदा करने पर क़ादिर नहीं हुई। बारह साल बाद एक दिन फिर वही सवार रास्ते में मिल गया और ताज़ियाना दिखा कर डराया और कहा कि बात कर। फ़ौरन आप रहमतुल्लाह अलैह में बोलने की ताक़त पैदा हो गई, लेकिन ज़बान में किसी क़द्र गिरिफ़्तगी यानी लुकनत बाक़ी रही। उस के बाद आप रहमतुल्लाह अलैह क़स्बा चंदलौस सरकार बिहार में शैख़ुल हद्दाद इब्ने ज़ियाउद्दीन रहमतुल्लाह अलैह की ख़िदमत में गए और दोनों बुज़ुर्गों की सोहबत गर्म होने लगी,क्योंकि दोनों सुहरवर्दिया सिल्सिले में से थे, कमो बेश नौ साल आप रहमतुल्लाह अलैह वहां रहे और बहुत से इल्म के प्यासों को आप रहमतुल्लाह अलैह ने इल्म व फज़्ल के दरिया से सैराब किया।

इसी अस्ना में सैय्यिद आदम इब्ने सैय्यिद जुम्मन मदारी रहमतुल्लाह अलैह अपने बाप के हुक्म से हलीसा से फ़ातिहा के वास्ते शैख़ुल हद्दाद रहमतुल्लाह अलैह की ख़िदमत में आए, सैय्यिद आदम नौजवान और दाढ़ी मुंडवाया करते थे, हज़रत शाह फखरूद्दीन रहमतुल्लाह अलैह ने सैय्यिद आदम का रुख़्सार यानी चेहरा दाढ़ी से साफ़ देख कर नसीहत की कि सादात को सुन्नत को छोड़ना सख़्त ना पसंदीदा है, सैय्यिद आदम को येह नसीहत बहुत

नागवार गुज़री और हलीसा वापस पहुंच कर अपने बाप हज़रत सैय्यिद जुम्मन रहमतुल्लाह अलैह से शिकायत की, शैख़ जुम्मन रहमतुल्लाह अलैह ने फ़रमाया : साहिबज़ादे उस दरवेश का कहना सही और सच्ची नसीहत है, जो अमल करने के लाइक़ है, सैय्यिद आदम अपने बाप की तस्दीक़ करने से शाह फखरूद्दीन रहमतुल्लाह अलैह की हिदायत के गिरवीदा हो गये, इस के बाद सैय्यिद जुम्मन रहमतुल्लाह अलैह ने एक ख़ादिम के हाथ चंद लौंगें और किसी क़द्र तज शाह फखरूद्दीन रहमतुल्लाह अलैह के पास भेज कर पैग़ाम भेजा कि अज़ रुये मुलाक़ात बेहद है लेकिन पीरी यानी बुढ़ापा हाज़िरी से रुकावट है, जिस वक़्त ख़ादिम शाह फखरूद्दीन रहमतुल्लाह अलैह की ख़ानक़ाह में पहुंचा, दर्स जारी था, खादिम ने तबर्रुक और पैग़ाम दोनों पेश किया, शाह फखरूद्दीन रहमतुल्लाह अलैह फ़ौरन मुलाज़िमत के इरादे से उठ खड़े हुए, जब सैय्यिद जुम्मन रहमतुल्लाह अलैह के क़स्बे के क़रीब पहुंचे तो सैय्यिद जुम्मन रहमतुल्लाह अलैह के हुक्म से सैय्यिद आदम ने शाह फखरूद्दीन रहमतुल्लाह अलैह का इस्तिक़बाल किया, जब दोनों बुज़ुर्ग आपस में मिले, तमाम काग़ज़ी नुक़ूश आप रहमतुल्लाह अलैह के सफ़्हा ए ख़ातिर यानी दिल से साफ़ हो गए, सैय्यिद जुम्मन रहमतुल्लाह अलैह ने आप रहमतुल्लाह अलैह को ख़ानक़ाह के एक हुजरे में ठहराया, चंद रोज़ आप रहमतुल्लाह अलैह वहां रहे। फिर ग़ुलामाने जां निसार में शामिल होने की इल्तिमास की।

सैय्यिद जुम्मन रहमतुल्लाह अलैह ने जवाब दिया: फखरे आलम जुम्मन जाहिल के मुरीद हो जाएं येह बात ज़ेबा यानी अच्छी नहीं, जब आप रहमतुल्लाह अलैह ने बहुत कुछ आजिज़ी और नियाज़ मंदी के साथ बार बार इल्तिमास यानी गुज़ारिश पेश की तो सैय्यिद जुम्मन रहमतुल्लाह अलैह ने अपने मुँह का पान (यानी उगाल) शाह फखरूद्दीन रहमतुल्लाह अलैह को दिया, इस के खाते ही इल्मी चिराग़ जो गुल हो गया था अज सरे नौ रौशन हो गया। फिर

हुक्म दिया कि बिहार में जाकर शैख़ शर्फ़ुद्दीन यहया मुनीरी रहमतुल्लाह अलैह के रौज़े पर मोअतकिफ़ हो कर उनकी रूहे पाक से हिदायत चाहो।

शाह फखरूद्दीन रहमतुल्लाह अलैह ने सैय्यिद जुम्मन रहमतुल्लाह अलैह के हुक्म की तामील की। चंद रोज़ के बाद शैख शर्फुद्दीन यहया मुनीरी रहमतुल्लाह अलैह की जानिब से ख्वाब में इरशाद हुआ कि तुम्हारी रहनुमाई सैय्यिद जुम्मन रहमतुल्लाह अलैह की हिदायत पर मौक़ूफ़ है उन्ही की ख़ानक़ाह में लौट जाओ। शाह फखरूद्दीन रहमतुल्लाह अलैह ने वहां से आकर येह सब माजरा बयान फ़रमाया। सैय्यिद जुम्मन रहमतुल्लाह अलैह ने हुक्म दिया कि आगरा की तरफ़ जाओ और रास्ते में ख्वाह किसी भी किस्म की बात सुनने में आए वापस मत लौटो। जब बदीउद्दीन शाह मदार रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार पर पहुँचो तो आगरा की इजाज़त माँगना। सैय्यिद जुम्मन रहमतुल्लाह अलैह रास्ते में येह हिदायत फ़रमा कर वापस चले गए।

शाह फखरूद्दीन रहमतुल्लाह अलैह ने जौनपूर पहुंच कर सैय्यिद जुम्मन रहमतुल्लाह अलैह की विसाल की ख़बर सुनी, येह हाल सुन कर बेक़ाबू हो गए, पहले वापसी का इरादा किया मगर नसीहत का ख़्याल आया और ना चाहते हुए आगे को रवाना हुए। क़स्बा बांगुर मऊ में पहुंच कर हौज़ के किनारे पर रात गुज़ारी। उसी रात को शाह बदीउद्दीन शाह मदार रहमतुल्लाह अलैह ने आलमे मिसाल में जल्वा अफ़रोज़ हो कर आगरा रहने की इजाज़त दे दी और हुक्म दिया कि किसी की मुताअय्यन जागीर आपने गुज़र औक़ात के लिए क़बूल ना करना और जो दरवेश उस शहर का साहिबे विलायत हो उस की रिजामंदी से मकान बनाना।

आख़िरे कार बाबर बादशाह के ज़माने में आप रहमतुल्लाह अलैह आगरा में तशरीफ़ लाए। उस वक़्त शैख़ ख़लील रहमतुल्लाह अलैह ज़ाहिदे ज़माना थे, सबसे पहले उनकी ख़िदमत में गए, वहां आप रहमतुल्लाह अलैह का दिल

गिरवीदा नहीं हुआ। उस के बाद आप रहमतुल्लाह अलैह शैख़ अलाउद्दीन मज्ज़ूब रहमतुल्लाह अलैह की ख़िदमत में हाज़िर हुए, शैख़ अलाउद्दीन मज्ज़ूब रहमतुल्लाह अलैह ने फ़रमाया :तुम हलीसा से आते हो लेकिन तुम्हारी जगह तो सरहिंद है। शाह फखरूद्दीन रहमतुल्लाह अलैह ने कुछ जवाब नहीं दिया और ख़ामोश रहे। फिर मज्ज़ूबे इलाही रहमतुल्लाह अलैह ने एक रोटी का टुकड़ा कजकौल से आप रहमतुल्लाह अलैह को दिया और फ़रमाया पंजाब को चले जाओ वहां गेहूँ अर्ज़ां यानी सस्ता हैं। इस पर भी आप रहमतुल्लाह अलैह ख़ामोश रहे, तीसरी मर्तबा इरशाद हुआ: एक सेर है, आधा तुम्हारा आधा मेरा। उस का भी आप रहमतुल्लाह अलैह ने कुछ जवाब नहीं दिया। चौथी मर्तबा शैख अलाउद्दीन मज्ज़ूब रहमतुल्लाह अलैह ने ख़िताब किया। इस वक़्त तक यहां मैं था अब तुम रहो। आप रहमतुल्लाह अलैह ने फ़ौरन जवाब दिया कि अगर आप रहमतुल्लाह अलैह की येह राये है तो आप रहमतुल्लाह अलैह मेरे वास्ते जगह छोड़ दें और ख़ुद दूसरी जगह तजवीज़ फरमा लें।

शैख़ अलाउद्दीन मज्ज़ूब रहमतुल्लाह अलैह उसी वक़्त उस जगह से जो कि जमुना के किनारे मीर रफ़ीउद्दीन मुहद्दिस अकबराबादी रहमतुल्लाह अलैह के मुहल्ला में वाक़ेअ थी उठ कर खड़े हुए और नई की मंडी तशरीफ़ ले गये जहाँ अब आप रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक है।

शैख अलाउद्दीन मज्ज़ूब रहमतुल्लाह अलैह के जाने के बाद शाह फखरूद्दीन रहमतुल्लाह अलैह ने वहां की सुकूनत इख्तियार फ़रमाई।

आप रहमतुल्लाह अलैह के औसाफ़ और कमालात और ख़िरक़े आदात वाकिआत बेशुमार हैं, साहिब अख्बारुल अस्फ़िया का बयान है कि मेरे जद्दे बुज़ुर्गवार शैख़ यूसुफ़ अंसारी रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाया करते थे कि जब तक मैंने शाह फ़खरुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह को ना देखा था, क़ुतुबुल मदार शाह बदीउद्दीन रहमतुल्लाह अलैह की बुज़ुर्गी और कमालात के हालात किताबों में पढ़

कर या बुज़ुर्गों से ज़बानी सुन कर पूरे तौर से मुझे यक़ीन ना आया था, आप रहमतुल्लाह अलैह के कमालातो औसाफ़ को देख कर मैं आप रहमतुल्लाह अलैह के दादा पीर यानी शाह मदार रहमतुल्लाह अलैह की बुज़ुर्गी का क़ाइल हो गया।

मुल्ला अब्दुल क़ादिर बदायूनी रहमतुल्लाह अलैह **मुंतख़बुत्तवारीख** में लिखते हैं कि शैख़ फ़खरुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह एक पीर नूरानी मुतवक्किल, साहिबे ख़ल्वत बुज़ुर्ग थे। रियाज़त भी बहुत करते थे। कभी अपने घर से बाहर ना निकलते थे। हर जुमा को आप रहमतुल्लाह अलैह की ख़ानक़ाह में सूफ़ियों का मज्मा होता था और निहायत ऐहतिमाम से मज्लिसे सिमाअ मुंअक़िद होती थी। हाज़िरीन में कोई कैसा ही सिमाअ का मुन्किर क्यों ना हो उस को भी हाल आ जाता था।

शैख़ फखरूद्दीन रहमतुल्लाह अलैह का वज्द और लोगों पर असर करता था। मजलिस से फ़ारिग़ हो कर दस्तरख़्वान बिछाया जाता था। बादशाह, अमीर, ग़रीब, फ़क़ीर सब बराबर बैठ कर खाना खाते थे। ख़ान ख़ाना बैरम ख़ां हमेशा जुमा को आप रहमतुल्लाह अलैह की ही मस्जिद में नमाज़ पढ़ कर मजलिस में शरीक हुआ करता था। आप रहमतुल्लाह अलैह की सोहबत के असर से उस पर भी बड़ी रिक़्क़त तारी हुआ करती थी, नशिस्त और बर्ख़ास्त यानी उठने बैठने, खुर्दो नोश यानी खाने पीने में और लोगों से कुछ उस को इम्तियाज़ ना होता था।

जब आप रहमतुल्लाह अलैह को किसी किस्म की बीमारी पेश आती तो आप रहमतुल्लाह अलैह ख़ुशगुलू यानी अच्छी आवाज़ वाले कव्वालों को बुला कर सिमाअ की मजलिस मुनअक़िद फ़रमाया करते थे और वज्द की हालत में मिज़ाज की बद मज़्गी तंदरुस्ती से बदल जाती थी मगर जब मरज़ुल मौत आरिज़ हुआ तो मजलिसे सिमाअ आप रहमतुल्लाह अलैह ने नहीं की। एक रोज़ आप रहमतुल्लाह अलैह के ज़माने के मशाईख़ीन में से शैख़

यूसुफ़ अंसारी रहमतुल्लाह अलैह, सैय्यिद जलाल क़ादरी रहमतुल्लाह अलैह, शैख़ अब्दुल मोमिन चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह और दीगर चंद अस्हाब इयादत के वास्ते आए थे, सब ने बिल इत्तिफ़ाक़ इरादा किया कि इस बीमारी में सिमाअ ना सुनने का सबब दरयाफ्त फ़रमाएं यानी पूछें लेकिन इस से पहले कि लब हिलाएँ आप रहमतुल्लाह अलैह ने राजी नाम के एक शख़्स को बुलाया और फ़रमाया कि येह ग़ज़ल गाओ :

मा क़िस्सा नौ शुतेम ब सुल्ताँ कि रसानद
जां साख़ता करदेम ब जानां कि रसानद

जब ग़ज़ल तख़ल्लुस तक पहुंच गई तो फ़रमाया फ़ुर्सत कम और शरीअत की रिआयत वाजिब है,गाना बंद करो।

तीन रोज़ बाद 19 जुमादस्सानी 970 हिजरी, ब मुताबिक़1562 ईस्वी को आप रहमतुल्लाह अलैह पहली मर्तबा अपनी ख़ानक़ाह से बाहर निकले और उस मक़ाम पर जहां अब आप रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक वाक़ेअ है क़ियाम फरमा कर उसी दिन बहिश्ते बरीं को रवाना हो गए यानी आप रहमतुल्लाह अलैह विसाल फरमा गए, 147 बरस की उम्र पाई।

मज़ार मुबारक आबादी से मुत्तसिल मुहल्ला जीवनी मंडी शुमाल यानी उत्तर की जानिब वाक़ेअ है, पहले मज़ार पर आलीशान इमारत मौजूद थी, मराठों के ज़माने में गुंबद गिर पड़ा जिसको बहाव नाम का एक आगरा के हाकिम ने ख्वाब में देख कर साफ़ करा दिया और आप रहमतुल्लाह अलैह के हुक्म के मुताबिक कोई इमारत तामीर नहीं कराई, अब दरगाह की चहार दीवारी भी खुद गई है, ग़दर के दिनों यानी 1857 ईस्वी की जंगे आज़ादी तक निहायत धूम धाम से आप रहमतुल्लाह अलैह का उर्स होता था और बहुत सारी ज़मीन दरगाह के अखराजात के वास्ते माफ़ यानी वक़्फ़ चली आती थी लेकिन अब येह मौजूद नहीं।

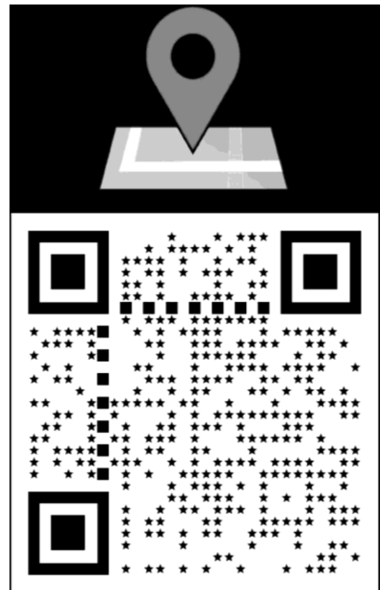
सैय्यिद मीर जान रहमतुल्लाह अलैह आप रहमतुल्लाह अलैह की औलाद में थे, उनके नवासे मीर अली हुसैन साहिब, सैय्यिद मुज़फ़्फ़र हुसैन साहिब पेशकार कलेक्टरी साकिन चिड़ीमार टोला मौजूद हैं, उनके पास आप रहमतुल्लाह अलैह के तबर्रुकात यानी हुज़ूर सरवर आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अबरु मुबारक और दाढ़ी मुबारक के बाल मुबारक नस्लन बाद नस्लिन चले आते हैं, जिनकी ज़ियारत हर साल 11 रबीउल अव्वल को कराई जाती है। (बोस्ताने अख्यार, पेज133.138)

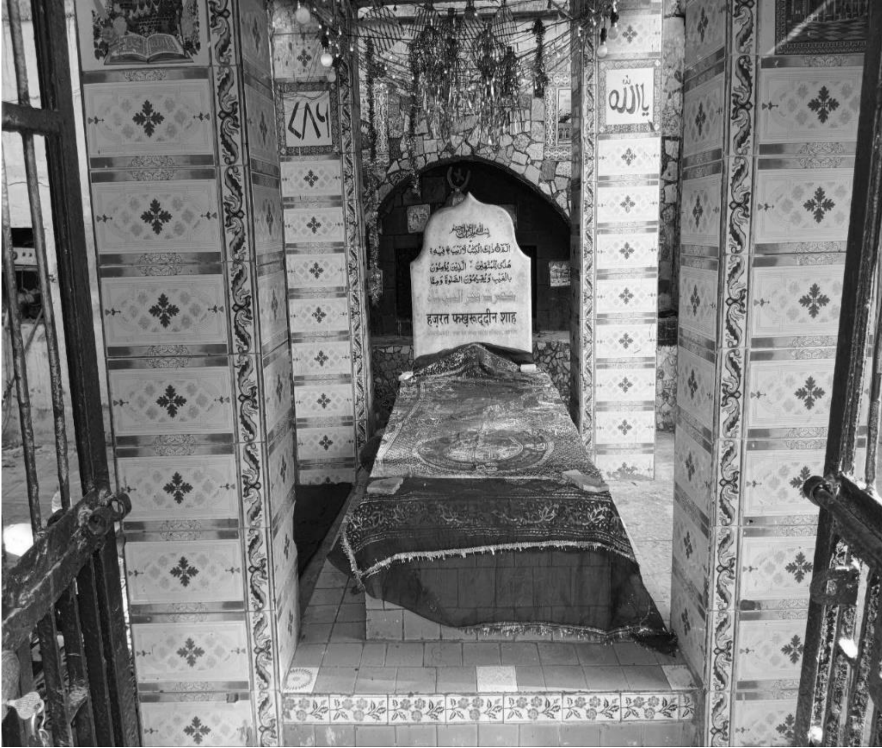
मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक जीवनी मंडी में अंबेडकर की मूर्ती के पास है, मज़ार के सामने छोटा सा मैदान है, मज़ार के ऊपर मामूली छत है बारिश का पानी मज़ार की चहार दीवारी के अंदर जमा हो जाता है।

कोई अहले खैर वहाँ जा कर देखे और मरम्मत का काम करवा कर सवाब हासिल करे।

शाह फखरूद्दीन मदारी रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार की **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए, आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।





(15) **शाह समुंदर**

आप रहमतुल्लाह अलैह के असली नाम और हालात का पता नहीं चलता । आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार को पुराना बताया जाता है जिससे क़ुरबो जवार के लोगों को ख़ास अक़ीदत है और बहुत सी ख़ुश ऐअतिक़ादगी की रिवायतें मशहूर हैं ।

आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** मुत्तसिल जीवनी मंडी आगरा मिल के क़रीब वाक़ेअ है, पास ही एक मस्जिद बनी है ।

(बोस्ताने अख्यार, पेज84.85)

घटिया आज़म ख़ां

(16) मख्दूम सिधारी चिश्ती

आप रहमतुल्लाह अलैह का नाम मुबारक शैख़ सादुल्लाह है, हज़रत शैख़ सलीम चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह के ख़लीफ़ए आज़म, क़ुतुबुल अकताब शैख़ इबादुल्लाह मख्दूम भिकारी नरवरी रहमतुल्लाह अलैह के भाई और बनी इसराईल से थे।

अपने पीर रहमतुल्लाह अलैह के हुक्म से अकबराबाद (आगरा) में सुकूनत इख्तियार फ़रमाई, तमाम उम्र आगरा में बंदगाने ख़ुदा को फ़ैज़ पहुंचाते रहे।

994 हिजरी में आप रहमतुल्लाह अलैह ने वफ़ात पाई, **मज़ार मुबारक** घटिया आज़म ख़ां की मस्जिद गली न्यारियां के क़रीब वाक़ेअ है, **"शजरतुल इस्लाम"** और **"शमाईलुर्रसूल"** मन्ज़ूम दो किताबें आप रहमतुल्लाह अलैह की यादगार हैं। वफ़ात की तारीख़ येह है:

चूँ शैख़ सिधारी आँ वली अहद
अज़ क़ैद वुजूद ख़ो बशतन रस्त
अल हक़्क़ ब विसाले हक़्क़ शर्फ़ याफ़्त
मस्ताना बदोस्त दोस्त पैवस्त
तारीख़े विसाले ऊ नविश्तम
अज़ बादए जाम वस्ल शुद मस्त

"अज़ बादए जाम वस्ल शुद मस्त" इस के अदद 994 बनते हैं और यही आप रहमतुल्लाह अलैह के वफ़ात का साल है।

(बोस्ताने अख्यार, पेज85.86)

(17) **शैख़ मुहम्मद सालेह क़ादरी आज़मी**

आप रहमतुल्लाह अलैह शैख़ इबादुल्लाह (शैख़ भिकारी बनी इसराईल) रहमतुल्लाह अलैह के फ़र्ज़ंदे रशीद यानी बेटे हैं जो हज़रत शैख़ सलीम चिश्ती फ़तेहपुरी रहमतुल्लाह अलैह के ख़लीफ़ा थे।

बारह बरस की उम्र में इल्म हासिल करने के वास्ते जौनपुर तशरीफ़ ले गए और मौलाना अब्दुल मजीद जौनपुरी रहमतुल्लाह अलैह के हल्क़ए दरस से उलूमे ज़ाहिरी में कमाल हासिल किया और अपने वालिद बुज़ुर्गवार रहमतुल्लाह अलैह और हज़रत शैख़ सलीम चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह की बा बरकत सोहबत से तरीक़त की आँखें रौशन कीं, आख़िरे कार सिल्सिला क़ादरिया आज़मियह में मुंसलिक हो कर आगरा में उलूमे ज़ाहिरी और बातिनी का फ़ैज़ जारी किया।

सुकरो जज़्ब, इश्क़ व मुहब्बत, क़नाअतो सब्र और तवक्कुल आप रहमतुल्लाह अलैह का बेमिस्ल था, हर अदना और आला आदमी आप रहमतुल्लाह अलैह से अक़ीदत रखता और शैखुश्शुयूख के ख़िताब से आप रहमतुल्लाह अलैह को याद करता था, अक्सर आप के ज़माने के फ़ुज़ला को आप रहमतुल्लाह अलैह से तलम्मुज़ हासिल था यानी वह सब आप के शागिर्द थे।

जुमा के दिन 13 ज़िलकादा 1067 हिजरी को आप रहमतुल्लाह अलैह ने इस जहाने फ़ानी से इंतिक़ाल फ़रमाया। **"शाह सालेह मुत्तक़ी"** के अदद आप रहमतुल्लाह अलैह के वफ़ात की तारीख़ है। **साहिबे मुख़्बिरुल वासिलीन** ने जो आप रहमतुल्लाह अलैह के शागिर्द और खास मुरीदों में से थे, आप रहमतुल्लाह अलैह के विसाल की तारीख़ बहुत तवील लिखी है।

आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** घटिया आज़म ख़ां में अपने वालिदे बुज़ुर्गवार रहमतुल्लाह अलैह के क़रीब था मगर अब उस का पता नहीं चलता। (बोस्ताने अख़्यार, पेज195.196)

कचहरी घाट, बाँस दरवाज़ा

(18) सुल्तान शहीद

आप रहमतुल्लाह अलैह अकबराबाद के शहीदों के सुल्तान हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह के कमालात की कई रिवायतें राक़िमे बोसतान से बयान की गई हैं, **मज़ार मुबारक** सड़क के किनारे कचहरी घाट, बाँस दरवाज़ा मुत्तसिल मकानात कालेथ साहिबान वाक़ेअ है, गून्दी का पुराना दरख़्त दीवार मकाने मुल्हिक़ा से टकरा कर आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार पर साया किए हुए है।

(बोस्ताने अख्यार, पेज86)

छिली ईंट

(19) सैय्यिद शाह आलम (रजब शहीद)

आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** छिली ईंट में मुत्तसिल कोठी पण्डित कैलाश नाथ वकील में वाक़ेअ है, लोग आप रहमतुल्लाह अलैह को सैय्यिद शाह आलम के नाम से मौसूम करते हैं, लेकिन गुंबद के दरवाज़ों की पेशानी पर रजब शहीद 1296 हिजरी लिखा हुआ है।

येह तारीख आप रहमतुल्लाह अलैह के गुंबद के तामीर का है। पहले आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार पर कोई इमारत नहीं थी, जब गोबिंद शाह दरवेश इस जगह आकर मुक़ीम हुए तो राय जोती प्रसाद रईसे आगरा ने जो कि गोबिंद शाह दरवेश का मोअतक़िद था उनके हुक्म से मज़ार पर गुंबद तामीर करवा दिया और आस पास की ज़मीन जो उन्ही की मिल्कियत थी वक़्फ़ कर दी।
(बोस्ताने अख्यार, पेज86.87)

पंजे मदरसा

(20) मौलवी आदिल

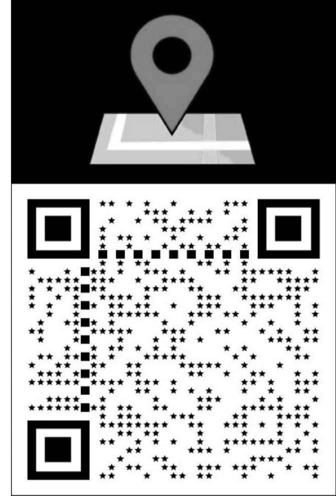
आप रहमतुल्लाह अलैह अकबराबाद यानी आगरा के उलमा में से हैं, मौलाना अहमदी रहमतुल्लाह अलैह जो मौलाना सैय्यिद अमजद अली शाह रहमतुल्लाह अलैह के वालिदे माजिद हैं आपके शागिर्द हैं।

आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** मस्जिद मुहल्ला मदरसा में वाक़ेअ है। (बोस्ताने अख्यार, पेज93)

मौजूदा हालत 2025

मौलवी आदिल रहमतुल्लाह अलैह की मज़ार मुबारक पंजे मदरसा की खानकाह की मस्जिद के दरवाज़े के पास बनी हुई है।

पंजा मदरसा में मौजूद तमाम मज़ारात के मज़ार की **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए, आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।



(21) मौलाना अहमदी क़ादरी

हज़रत का नाम मुबारक सैय्यिद अहमदुल्लाह और उर्फ मौलाना अहमदी था, आगरा के सादाते इज़ाम और उलमाए किराम में से थे, रस्मी

उलूम में मौलाना आदिल अकबराबादी के शागिर्दे रशीद थे, 1216 हिजरी में ख़ुल्दे बरीं की राह ली यानी आप रहमतुल्लाह अलैह का विसाल हो गया।

सैय्यिद अमजद अली शाह रहमतुल्लाह अलैह आप रहमतुल्लाह अलैह के फ़र्ज़ंदे रशीद यानी बेटे ने येह तारीखे रिहलत मौज़ूं फ़रमाई जो आप रहमतुल्लाह अलैह के **मज़ार मुबारक** वाक़ेअ मस्जिद शाही मुहल्ला मदरसा पर लिखा हुआ है।

आप रहमतुल्लाह अलैह के तीन साहिबज़ादे थे:

(1)बड़े बेटे सैय्यिद अमजद अली शाह रहमतुल्लाह अलैह

(2)मँझले बेटे सैय्यिद मुहम्मद मीर रहमतुल्लाह अलैह और

(3)छोटे बेटे ग़ुलाम मुस्तफ़ा रहमतुल्लाह अलैह

बड़े और मँझले बेटे के हालात इस किताब में मौजूद हैं, छोटे साहिबज़ादे मौलवी डिप्टी इम्दादुल उला मरहूम डिप्टी कलैक्टर के वालिदे माजिद थे। (बोस्ताने अख्यार, पेज43.44)

मौजूदा हालत 2025

मौलाना अहमदी कादरी रहमतुल्लाह अलैह की मज़ार मुबारक पंजे मदरसा की खानकाह के दरवाज़े के पास बनी हुई है।

दीवार पर एक पत्थर लगा हुआ है जिस पर **हज़रत सैय्यिद मौलाना अहमदुल्लाह कादरी अहमदी अकबराबादी** लिखा हुआ है और नाम के नीचे फारसी के चार शेअर भी लिखे हैं। और तारीख **1216 हिजरी** लिखी है।

(22) सैय्यिद अमजद अली शाह जाफ़री क़ादरी

आप रहमतुल्लाह अलैह 31 वास्ते से शहीदे दश्ते कर्बला इमामे हुसैन रज़ीअल्लाहु अन्हु से जा मिलते हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह के पाँचवे दादा क़ुतुबुल

अकताब मौलाना सैय्यिद इब्राहीम क़ुतुब जाफ़री रहमतुल्लाह अलैह मदीनए मुनव्वरा से जहांगीर बादशाह के ज़माने में आगरा में तशरीफ़ लाकर सुकूनत पज़ीर हुए थे। ख़ान जहां लोदी जो जहांगीर के ज़माने का मशहूरो मारूफ़ अमीर था आप रहमतुल्लाह अलैह का मोअतक़िदो मुरीद था और उसने आप रहमतुल्लाह अलैह के वास्ते मदरसा, मस्जिद और मकानात अपने महल के क़रीब तामीर कराए थे, जिस जगह येह मकानात थे वो अब लोदी ख़ां का टीला मशहूर और रेलवे स्टेशन आगरा सिटी से मिला हुआ वाक़ेअ है।

आप रहमतुल्लाह अलैह के वालिदे माजिद मौलाना सैय्यिद अहमदी रहमतुल्लाह अलैह के ज़माने में इत्तिफ़ाक़ से उन मकानात में आग लगी और तमाम मकानात और कुतुब ख़ाना वग़ैरा जल कर ख़ाकिस्तर हो गया।

आप रहमतुल्लाह अलैह मौलाना ज़ियाउद्दीन बल्ख़ी रहमतुल्लाह अलैह के मुरीद और सैय्यिद अब्दुल्लाह क़ादरी बग़दादी रामपुरी रहमतुल्लाह अलैह के ख़लीफ़ए आज़म थे, उलूमे अक़्ली और नक़्ली दोनों में यकताए ज़माना थे, शायरी में **'असग़र'** तख़ल्लुस और शायरी में कमाल हासिल था जिसका सबूत आप रहमतुल्लाह अलैह का मत्बूआ दीवान मौजूद है जो हक़ाइक़ और मआरिफ़ के मोतीयों का ख़ज़ाना है। कमालाते बातिनी के मुताअल्लिक़ सिर्फ येह रिवायत काफ़ी है कि हुज़ूर महबूबे सुब्हानी ग़ौसुल आज़म जीलानी रहमतुल्लाह अलैह के इरशाद फरमाने से आप रहमतुल्लाह अलैह के पीर बुज़ुर्गवार आप रहमतुल्लाह अलैह ही की तालीम के वास्ते बग़दाद से हिन्दुस्तान में आए थे।

आप रहमतुल्लाह अलैह ग्यारहवीं शरीफ़ निहायत ऐहतिमाम और धूम धाम से किया करते थे जिसका सिल्सिला आप रहमतुल्लाह अलैह के ख़ानदान में अब तक जारी है जिसके अख़राजात के वास्ते मौज़ा बोदला परगना आगरा माफ़ यानी वक़्फ़ है।

22 रबीउल अव्वल 1230 हिजरी को आप रहमतुल्लाह अलैह ने रिहलत फ़रमाई और मस्जिद शाही मुहल्ला मदरसा के इहाते में सिपुर्दे ख़ाक किए गए यानी आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** वहीं मौजूद है।

"वाक़िफ़े राहे ख़ुदा सैय्यिद अमजद अली" इस के आदाद 1230 बनते हैं और यही आप रहमतुल्लाह अलैह के वफ़ात का साल है ।

आगरा के मशहूर अदीब और नक़्क़ादे सुख़न जनाब सैय्यिद निज़ामुद्दीन शाह साहिब **"दिल गीर"** जिनका कलामे पसंदीदा तमाम हिन्दुस्तान में मशहूरो मारूफ़ है आप रहमतुल्लाह अलैह की यादगार और सज्जादा नशीन दरगाह हैं, अल्लाह पाक उनको बुज़ुर्गों के मर्तबा पर पहुंचाए और उन के उलूम और कमालाते ज़ाहिरी को अरूसे अमल के ज़ेवर से आरास्ता व पैरास्ता करे । आमीन (बोस्ताने अख़्यार, पेज50.51)

माहताबे अजमेर नामी किताब में ज़िक्र

हज़रत मौलाना सैय्यिद शाह अमजद अली कादरी अल जाफ़री मुताख़ल्लिस असग़र इब्ने मौलवी सैय्यिद अहमदी शाह इब्ने सैय्यिद इल्हामुल्लाह इब्ने सैय्यिद ख़लीलुल्लाह इब्ने सैय्यिद फ़तहुल्लाह इब्ने हज़रत सैय्यिद इब्राहीम मदनी अलमारूफ़ क़ुतुबुल मदनी रहमतुल्लाह अलैहिम सिल्सिला नसब 23 वास्तों से हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ रहमतुल्लाह अलैह तक पहुंचता है ।

हज़रत क़ुतुबुल मदनी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के रौज़ा मुनव्वरा के सज्जादा नशीन थे। जहांगीर बादशाह के ज़माने में मदीना से हिन्दुस्तान आये और आगरा में इक़ामत डाली यानी रहने लगे। अराकीने सल्तनत में से अक्सर अमीर लोग जैसे ख़ान जहां लोदी आप रहमतुल्लाह अलैह के मोअतक़िद थे। ख़ान जहां लोदी ने अपने महल्लात का बड़ा हिस्सा सैय्यिद फ़तहुल्लाह रहमतुल्लाह अलैह की ख़िदमत में पेश कर दिया था ।

मौलवी सैय्यिद अहमदुल्ला शाह अल मशहूर सैय्यिद अहमदी के ज़माना में आगरा में इन्क़िलाबात सियासी रुनुमा हुए जिसका असर अहमदुल्लाह शाह साहिब पर भी पड़ा, हवेली आग के नज़र हो गई, इल्मी सरमाया जो एक हज़ार किताबों पर मुश्तमिल था वो भी जल कर ख़ाक हुआ। अहमदुल्लाह शाह साहिब रहमतुल्लाह अलैह यहां से उठकर मदरसा अफ़ज़ल ख़ां में इक़ामत पज़ीर हो गए। वहीं आप रहमतुल्लाह अलैह के उस्ताद मौलाना शाह आदिल रहमतुल्लाह अलैह रहा करते थे। उनके बाद मस्नदे तदरीस पर बैठे, दर्सो तदरीस और रुशदो हिदायत में लग गए। और 1216 हिजरी में इंतिक़ाल फ़रमाया

हज़रत अमजद अली शाह रहमतुल्लाह अलैह ने अक्ली और नक्ली इल्म अपने वालिदे माजिद रहमतुल्लाह अलैह से हासिल किया, इल्म हासिल करने के बाद दर्सो तदरीस में मशग़ूल हो गए।

मौलवी मुहम्मद हुसैन मुरादाबादी **अन्वारुल आरिफ़ीन** में लिखते हैं सैय्यिद अमजद अली इब्ने मौलवी सैय्यिद अहमद जाफ़री, ख़लीफ़ा अब्दुल्लाह बग़दादी इल्म व फ़ज़्ल के साथ शैख़े तरीक़त भी थे।

हज़रत शाह अब्दुल्लाह बग़दादी रहमतुल्लाह अलैह के मुरीद और ख़लीफ़ा थे और सैय्यिद शाह ज़ियाउद्दीन बल्ख़ी रहमतुल्लाह अलैह से भी ख़ानदाने चिश्तिया, नक़्शबंदिया में साहिबे इजाज़त थे।

2 रबीउल अव्वल 1232 हिजरी में ब मकाम हवेली ख़्वाजा नाई मंडी आगरा में इस जहाने फ़ानी से रेहलत फ़रमाई और मदरसा शाही पंजा में दफ़न हुए। (माहताबे अजमेर पेज 106,108)

ग़ौसे आज़म शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रहमतुल्लाह अलैह के हुक्म से हज़रत अब्दुल्लाह बग़दादी रामपुरी रहमतुल्लाह अलैह बग़दाद से हिन्दुस्तान तशरीफ़ ला कर हज़रत सैय्यिद अमजद अली शाह रहमतुल्लाह अलैह को

ख़िलाफ़त और इजाज़त से नवाज़ा जिस का हाल ख़ुद हज़रत सैय्यिद अमजद अली शाह रहमतुल्लाह अलैह की ज़बानी सुनिए चुनांचे फ़रमाते हैं:

जब फ़र्ज़ंदे महबूबे सुब्हानी हज़रत सैय्यिद अब्दुल्लाह बग़दादी कादरी रहमतुल्लाह अलैह आगरा तशरीफ़ लाए और मुहल्ला ताजगंज में क़ियाम फ़रमाया तो मैं भी हाज़िरे ख़िदमत हुआ और क़दम बोसी की। हज़रत अब्दुल्लाह बगदादी रहमतुल्लाह अलैह ने मेरा सर अपने सीने से लगा लिया और कसीर मजमा के सामने फ़रमाया: ऐ मेरे बेटे अमजद अली! मैं आगरा में अपने जद्द हज़रत ग़ौसे आज़म रहमतुल्लाह अलैह के हुक्म से इसलिए आया हूँ कि तुम्हें बुज़ुर्गाने दीन का खिरका, कुलाह यानी टोपी, इल्म और ख़िलाफ़त इनायत करूँ। मैं हज़रत ग़ौसे पाक रहमतुल्लाह अलैह के हुक्म के इत्तिबा में यहां तक पहुंचा हूँ। तुम्हें मुबारक हो कि येह दौलत बे मांगे मिल रही है। येह सुनकर ख़ुशी की हद ना रही और मुझ पर एक बे ख़ुदी तारी हो गई, जब मुझे होश आया तो मैंने अर्ज़ किया : ऐ मेरे आक़ा! कमज़ोर च्यूंटी से पहाड़ का बोझ कैसे बर्दाश्त हो सकता है? हज़रत अब्दुल्लाह बग़दादी रहमतुल्लाह अलैह ने तबस्सुम फ़रमाया और इरशाद फ़रमाया: येह मन्सब मेरे जद्द हज़रत ग़ौसे आज़म रहमतुल्लाह अलैह ने तुम्हें इनायत फ़रमाया है मेरे हाथ से लो और क़ुदरते क़ादिर का तमाशा देखो।

हज़रत ग़ौसे पाक रहमतुल्लाह अलैह ने एक चोर को एक नज़र में क़ुतुब बना दिया था तुम तो शरीफ़ुल क़ौम और साहिबे इल्म हो और सैय्यिद हो और दरवेशों से निस्बत रखते हो, तुम्हारे वालिद रहमतुल्लाह अलैह भी इस सिल्सिले से ताअल्लुक़ रखते हैं। अगर तुम्हें अपनी शफ़क़त की वजह से इस नेअमत से नवाज़ा गया तो क्या बईद है।

हज़रत अमजद अली शाह रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते: हैं कि चंद मवानिआत यानी रुकावट की वजह से ख़िलाफ़त अता करने में कुछ ताख़ीर

होती रही यहां तक कि ग्यारहवीं के दिन मुझे तलब फ़रमाया और शोरफा, नोजबा और मशाईख़ के एक बड़े मजमा के सामने अपने हाथ से मुझे खिरकए ख़िलाफ़त पहनाया और अपने सर मुबारक की टोपी मेरे सर पर रखी और अलमे कादरी और ख़िलाफ़त नामा जो मेरे पास मौजूद है अता फ़रमाया और मुरीदों को हुक्म दिया कि उनको मेरा क़ाइम मक़ाम और नाइब समझते हुए हर महीने की ग्यारहवीं और ख़ास कर बड़ी ग्यारहवीं की फ़ातिहा में उनके मददगार और मुआविन रहें और मेरे जद्द की नियाज़ उनको पहुंचाएं और बाल बराबर उनके हुक्म से इन्हिराफ़ ना करें यानी ना हटें, जो कोई उनके ख़िलाफ़ होगा वो मेरे और मेरे जद्द बुजुर्गवार यानी गौसे पाक रहमतुल्लाह अलैह के ख़िलाफ़ है। और इसी रोज़ ख़्वाजा मुहम्मद मीर साहिब रहमतुल्लाह अलैह को खिरकए ख़िलाफ़त, ख़ास टोपी और इल्म मर्हमत फ़रमाया।

इस के बाद मौलवी शम्सुद्दुहा रहमतुल्लाह अलैह और सैय्यिद हसन अली साहिब रहमतुल्लाह अलैह को खिरकए ख़िलाफ़त, टोपी मुबारक और ख़िलाफ़त नामा अता हुआ।

जब हज़रत अब्दुल्लाह बग़दादी रहमतुल्लाह अलैह आगरा से रामपुर तशरीफ़ ले गए जहां अब हज़रत अब्दुल्लाह बग़दादी रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक है तो वहां पहुंच कर मुझे तलब फ़रमाया और वहां ख़िल्अते ख़ास, दस्तार अपने सर मुबारक की और पंजए बग़दादी और अलम नामा अता फ़रमाया।

येह पंजा बग़दाद शरीफ़ का बना हुआ है और इस में **"या सैय्यिद सुल्तान अब्दुल क़ादिर जीलानी शैइन लिल्लाह अल मदद"** लिखा हुआ है। येह अलम हज़रत अब्दुल्लाह बग़दादी रहमतुल्लाह अलैह बग़दाद शरीफ़ से हिन्दुस्तान तशरीफ़ आवरी के वक़्त साथ लाए थे। हज़रत अब्दुल्लाह बग़दादी रहमतुल्लाह अलैह ने फ़रमाया कि येह अलम मुबारक मेरे जद्द और मेरे

आक़ा ग़ौसे पाक रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार अक़्दस के सिरहाने लगा हुआ था, मैं उसे हिन्दुस्तान ले आया था, अब हज़रत ग़ौसे आज़म रहमतुल्लाह अलैह की येह अमानत उनके हुक्म के मुताबिक़ तुम्हें इनायत करता हूँ। इस की ताज़ीम जैसी चाहिए वैसी करना।

हज़रत अमजद अली शाह रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते हैं चुनांचे वो अलम शरीफ़ मेरे पास है और ग्यारहवीं शरीफ़ की मजलिस में एक मकान में जो कटरा आब रेशम ताजगंज में है और जिसके मालिकों ने वो मकान हज़रत ग़ौसे आज़म रहमतुल्लाह अलैह की नज़र कर दिया है। और हज़ारों मुरीदीन और तालिबीन उस रोज़ उस की ज़ियारत करते हैं।

(फ़र्ज़ंदे ग़ौसे आज़म पेज 116,117)

मौजूदा हालत 2025

सैय्यिद अमजद अली शाह ज़ाफरी कादरी रहमतुल्लाह अलैह की मज़ार मुबारक पंजे मदरसा की खानकाह में बनी हुई है। एक लाइन में 6 मज़ार हैं, इन मज़ारात के ऊपर एक खूबसूरत गुंबद बना हुआ है, खानकाह के इहाते में और भी कई कब्रें हैं जिन में से बाज़ में नाम लिखे हुए हैं और बाज़ में नहीं। खानकाह के गुंबद के नीचे जो मज़ारात हैं उनकी तफ़सील येह है :

1	2	3	4	5	6
मुहम्मद अली शाह	असगर अली शाह	**अमजद अली शाह**	मुज़फ्फ़र अली शाह	मुनव्वर अली शाह	सैय्यिद अब्दुल उला शाह

(23) **हकीम सैय्यिद मीर**

आप रहमतुल्लाह अलैह सैय्यिद अहमदी के मँझले बेटे हैं, तबीबे हाज़िक़, ख़ुदा दोस्त और दीगर औसाफ़े हमीदा और अख्लाक़े पसंदीदा से मौसूफ़ थे ।अपने वालिद माजिद रहमतुल्लाह अलैह के हुक्म से तमाम उम्र तबाबत के लिबास में मख़्लूक़े ख़ुदा को फ़ैज़ पहुंचाते रहे जिसका सिल्सिला अब तक आप रहमतुल्लाह अलैह के ख़ानदान में जारी है, चुनांचे हकीम मासूम अली इब्ने सैय्यिद इमाम अली आप रहमतुल्लाह अलैह के पोते इस ख़िदमत को अब तक अंजाम दे रहे हैं।

1223 हिजरी में आप रहमतुल्लाह अलैह ने इंतिक़ाल फ़रमाया आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** शाही मस्जिद मुहल्ला मदरसा के इहाते में वाक़ेअ है, लौहे मज़ार पर तारीख़ लिखी हुई है।

"चश्मए सिदक़ो सफ़ा कुदवए दीं सैय्यिद मीर" इस के आदाद 1223 बनते हैं और यही आप रहमतुल्लाह अलैह के वफ़ात का साल है। (बोस्ताने अख्यार, पेज220)

(24) **सैय्यिद मुनव्वर अली शाह**

आप रहमतुल्लाह अलैह सैय्यिद अमजद अली शाह रहमतुल्लाह अलैह के फ़र्ज़ंदे रशीद यानी बेटे, मुरीद और सज्जादा नशीन थे, ख़ुदा शनासों के पसंदीदा अफ़आल आप रहमतुल्लाह अलैह में मौजूद थे। आप रहमतुल्लाह अलैह के ज़माने में मराठों की हुकूमत थी, महाराजा सिंधिया बहादुर और अक्सर मराठा सरदार आप रहमतुल्लाह अलैह के मोअतक़िद और हल्क़ा ब गोश थे।

और हज़रत ग़ौसे आज़म रहमतुल्लाह अलैह की फातिहा यानी ग्यारहवीं शरीफ़ के अख़राजात और दीगर मसारिफ़ के वास्ते बेश क़रार जागीरें आप रहमतुल्लाह अलैह को दी थीं।

1235 हिजरी में आप रहमतुल्लाह अलैह ने वफ़ात पाई और अपने वालिदे बुज़ुर्गवार रहमतुल्लाह अलैह के क़रीब यानी मस्जिद शाही मुहल्ला मदरसा के इहाते में महव राहत हैं यानी **मज़ार मुबारक** है।

(बोस्ताने अख्यार, पेज216)

(25) सैय्यिद मुज़फ़्फ़र अली शाह

आप रहमतुल्लाह अलैह सैय्यिद मुनव्वर अली शाह इब्ने सैय्यिद अमजद अली शाह के फ़र्ज़ंद रशीद यानी बेटे और शैख़ निज़ामुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह के बेटे मौलाना नियाज़ अहमद बरेलवी रहमतुल्लाह अलैह के ख़लीफ़ा थे, तमाम उम्र तालिबाने राहे हक़ीक़त को तालीम व तल्कीन फरमा कर 1299 हिजरी में विसाल फ़रमाया, आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** सेहन मस्जिद मुहल्ला मदरसा में वाक़ेअ है और मज़ार के तख्ती पर येह तारीख़ लिखी हुई है :

शाह मुज़फ़्फ़र निस्फ़ शब अज़ आशिर अव्वल रबीअ
आसूदा दर क़ुर्ब इलाह अहलन व सहलन मरहबा
साल विसालश अज़ सर अल्लाहु अकबर ऐ हसन
शम्सुल हुदा बदरुद्दुजा नज्मुल उला नूरुल हबा

तसव्वुफ़ में एक ज़ख़ीम किताब **'जवाहिरे ग़ैबी'** आप रहमतुल्लाह अलैह के कमालात की बेहतरीन यादगार है जो मत्बअ नवल किशोर लखनऊ में छुप गई है। (बोस्ताने अख्यार, पेज210.211)

आगरा सिटी स्टेशन

(26) अब्दुल्लाह

आप रहमतुल्लाह अलैह उन्हीं बुज़ुर्गों में से हैं जिन का आख़िरी निशान बाक़ी और नाम बेनाम हो गया यानी आप रहमतुल्लाह अलैह के नाम का कुछ

पता नहीं चल सका। आगरा सिटी के जदीद स्टेशन के क़रीब एक बुलंद टीला है जहां शाही ज़माने में ख़ान जहां लोदी के आलीशान महल्लात बने हुए थे, ख़ान जहां लोदी जहांगीर और शाहजहाँ बादशाह के ज़माने का मशहूर अमीर आदमी था।

और इसी मुनासिबत से अब तक वो लोदी ख़ां का टीला कहलाता है, इस पर मुत्तसिल मकान स्टेशन मास्टर एक चबूतरे पर येह **मज़ार मुबारक** वाक़ेअ है, जो बहुत मुताबर्रिक ख़्याल किया जाता है, इस के क़रीब में दो तीन मज़ार और भी हैं, अब तक बहुत से मुनक़्क़श और ख़ुशनुमा पत्थर, सुतून, मेहराबें, फूल वग़ैरा बने हुए हैं, जिनसे ज़ाहिर है कि पुराने ज़माने में इस मज़ार पर आलीशान ख़ुशनुमा इमारत बनी हुई थी।

(बोस्ताने अख़्यार, पेज104.105)

नगला धुनी मुत्तसिल सुल्तानगंज

(27) मीर मुहम्मद नोमान बदखशी नक़्शबंदी मुजद्दिदी

आप रहमतुल्लाह अलैह काने बदख़शाँ के लाले बे बहा और मीर शम्सुद्दीन यहया इब्ने मीर ख़्वाजा जलालुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह के फ़र्ज़ंद रशीद यानी बेटे हैं, 977 हिजरी में आप रहमतुल्लाह अलैह ने आलमे दुनिया में ज़हूर फ़रमाया यानी पैदा हुये, आप रहमतुल्लाह अलैह के वालिदे माजिद रहमतुल्लाह अलैह बदख़शाँ के मशहूर मशाईख़ीन से थे, आप रहमतुल्लाह अलैह की पैदाइश से एक रात पहले उन्होंने हज़रत इमामे आज़म रहमतुल्लाह अलैह को ख्वाब में देखा। आप रहमतुल्लाह अलैह ने फ़रमाया कि आज तेरे एक बड़ा बुज़ुर्ग फ़र्ज़ंद यानी बेटा पैदा होगा उस को मेरे नाम पर नामज़द करना।

चुनांचे उसी दिन आप रहमतुल्लाह अलैह पैदा हुए और वालिद बुज़ुर्ग रहमतुल्लाह अलैह ने मुहम्मद नोमान आप रहमतुल्लाह अलैह का नाम रखा। तमीज़

करने के उम्र पर पहुंच कर आप रहमतुल्लाह अलैह ने तमाम उलूमे अक़्ली व नकली में कमाल पैदा किया और जहांगीर बादशाह के ज़माने में हिन्दुस्तान तशरीफ़ लाए और दिल्ली में सुकूनत पज़ीर हो कर हज़रत ख़्वाजा बाक़ी बिल्लाह रहमतुल्लाह अलैह के मुरीद हुए, ख़्वाजा बाक़ी बिल्लाह रहमतुल्लाह अलैह इल्म व फ़ज़्ल की वजह से आप रहमतुल्लाह अलैह पर ख़ास नज़रे इनायत रखते थे। जब ख़्वाजा बाक़ी बिल्लाह रहमतुल्लाह अलैह ने अपने चंद ख़ास मुरीद हज़रते शैख़ अहमद सरहिन्दी मुजद्दिद अल्फ़े सानी रहमतुल्लाह अलैह के सिपुर्द फ़रमाया तो मीर मुहम्मद नोमान रहमतुल्लाह अलैह भी उन्ही में से थे, आप रहमतुल्लाह अलैह को ख़्वाजा बाकी बिल्लाह रहमतुल्लाह अलैह की जुदाई नागवार थी लिहाज़ा जाने में तवक़्क़ुफ़ किया, इस पर हज़रत ख़्वाजा बाक़ी बिल्लाह रहमतुल्लाह अलैह ने ग़ज़बनाक हो कर फ़रमाया कि शैख़ अहमद सरहिन्दी रहमतुल्लाह अलैह एक ऐसे आफ़ताब हैं कि हमारे जैसे हज़ारों सितारे उनकी ज़मीर में कम हैं, इस के बाद आप रहमतुल्लाह अलैह मुजद्दिदे अल्फ़े सानी रहमतुल्लाह अलैह की ख़िदमत बा बरकत में हाज़िर हुए और आप रहमतुल्लाह अलैह के अन्फ़ास और खास तवज्जोह की बदौलत आफ़ताबे तरीकत हो कर चमके।

मुजद्दिदे अल्फ़े सानी रहमतुल्लाह अलैह ने अपने बेटों के बाद सबसे पहले आप रहमतुल्लाह अलैह ही को मन्सबे ख़िलाफ़त अता फरमा कर सनदे इजाज़त मर्हमत फ़रमाया जिसमें आप रहमतुल्लाह अलैह की निस्बत येह जुमला दर्ज था :

"बेशक अल्लाह पाक की मारिफ़त रखने वाले और कामिल सरदार"

हज़रत मुजद्दिदे अल्फ़े सानी रहमतुल्लाह अलैह ने खिरकए ख़िलाफ़त से मुशर्रफ़ फरमा कर आप रहमतुल्लाह अलैह को दक्कन में मुतय्यन किया, वहां आप रहमतुल्लाह अलैह के इरशाद को वो रौनक हुई कि बेशुमार प्यादों के इलावा चार सौ सवार आप रहमतुल्लाह अलैह के साथ शाम के हल्क़े में मुराक़िब होते थे, आख़िरे कार जहांगीर बादशाह ने आप रहमतुल्लाह अलैह के कमालात का हाल

सुन कर दारुल खिलाफ़त अकबराबाद यानी आगरा में आप रहमतुल्लाह अलैह को तलब कर लिया और दारुल खिलाफ़त की सदारते उज़्मा के मन्सब पर आप रहमतुल्लाह अलैह को सरफ़राज़ किया।

आप रहमतुल्लाह अलैह आलिमे बा अमल, साहिबे कश्फ़ो इल्हाम, ज़ोहदो तक़्वा में बे नज़ीर, शरीअत पर साबित क़दम और असरारे तरीक़त के मुश्किल कुशा थे। आप रहमतुल्लाह अलैह की हिदायतो रहनुमाई से हज़ारों आदमियों ने ख़ुदा शनासी की आँखें रौशन कीं। बहुत सी करामतें और खिरके आदात आप रहमतुल्लाह अलैह से ज़हूर में आएं जिनका कुछ बयान **रौज़ए क़ैयूमियह** में मौजूद है।

एक मर्तबा आलमे मिसाल में हुज़ूर, फख़्रे दो आलम महबूब मुअज़्ज़म सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ियारत से मुशर्रफ़ हुए, उस वक़्त हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ीअल्लाहु अन्हु भी हम रिकाब यानी साथ थे, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ीअल्लाहु अन्हु की तरफ़ मुख़ातब हो कर फ़रमाया कि नोमान से कहो कि जो शैख़ अहमद का मक़बूल है वो हमें भी मर्ग़ूब (यानी पसंद) और ख़ुदा को महबूब है और जो शैख़ अहमद का मर्दूद है वो मेरा और ख़ुदा का मर्दूद है, येह सुनते ही मीर मुहम्मद नोमान रहमतुल्लाह अलैह के दिल में ख़्याल गुज़रा कि शुक्र है कि मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मक़बूल हूँ। इस ख़्याल के गुज़रते ही हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जो तेरा मक़बूल है वो शैख़ अहमद और मेरा और ख़ुदा का मक़बूल है और जो तेरा मर्दूद है वो शैख़ अहमद और मेरा और ख़ुदा का मर्दूद है।

आगरा में आप रहमतुल्लाह अलैह का मकान और ख़ानक़ाह मुहल्ला सूफ़ीपुरा में वाक़ेअ थी जहां अब मज़ार मुबारक वाक़ेअ है, सदारत का इज्लास एक वसीअ और क़दीम जामा मस्जिद में होता था जो मौजूदा जामा

मस्जिद के क़रीब वाक़ेअ और मोहकमा की मस्जिद के नाम से मौसूम थी, येह मस्जिद अय्याम ग़दर यानी 1857 ईस्वी की जंग में शहीद हो गई।

हज़रत मुजद्दिदे अल्फ़े सानी रहमतुल्लाह अलैह के इंतिक़ाल के बाद आप रहमतुल्लाह अलैह ने 63 माद्दाहाए तारीख़ निकाले जिनका शुमार हुज़ूर सल्लल्लाह अलैहि व सल्लम की उम्र शरीफ़ के सालों के बराबर है, इन में से चंद जुमले येह हैं: जाने शरीअत। शहबाज़े तरीक़त। ख़ुसरु मारिफ़त।

सैय्यिद मुहिब्बुल्लाह मानिक पुरी और ख़्वाजा हाशिम कश्मी साहिबे ज़ुब्दतुल मक़ामात व बरकातुल अहमदियह आप रहमतुल्लाह अलैह के मशहूर मुरीदों में हैं।

18 सफ़र 1058 हिजरी को आप रहमतुल्लाह अलैह ने विसाल फ़रमाया, जिस्मे ख़ाकी ख़ानक़ाहे आली में सिपुर्दे ख़ाक किया गया।

मज़ार मुबारक नगला धुनी मुत्तसिल सुल्तानगंज में वाक़ेअ है, मज़ार पर एक मुख़्तसर गुंबद और अतराफ़ में लाल पत्थर की ग़ुलाम गर्दिश बनी थी जो अब बहुत शिकस्ता हालत में है, अगर मरम्मत ना हुई तो चंद रोज़ में बिल्कुल गिर जाएगी।

हाजी अल्ताफ़ हुसैन साहिब सौदागर दरगाह शरीफ़ की मरम्मत में इम्दाद देने पर आमादा हैं अल्लाह पाक मुसलमानाने आगरा को मरम्मत की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए, नवाब इस्लाम ख़ां बदख़शी (मीर ज़ियाउद्दीन हुसैन को जो आलमगीर बादशाह के ज़माने में मंसबे पंज हज़ारी पर सरफ़राज़ और अकबराबाद के सूबादार थे, पास हम वतनी मीर मुहम्मद नोमान से बहुत अक़ीदत थी, उन्होंने 1058 हिजरी में आप रहमतुल्लाह अलैह का येह मक़बरा और इस के क़रीब एक आलीशान मस्जिद तामीर कराई थी जिसकी तारीखे तामीर **"बानी इस्लाम ख़ान बहादुर"** (1058) है

अब वो मस्जिद मुन्हदिम हो गई जिसका पत्थर अकबराबादी मस्जिद में लगा हुआ है, नवाब इस्लाम ख़ान ने 1074 हिजरी में वफ़ात पाई और गुंबद के अंदर आप रहमतुल्लाह अलैह के साथ हम ख़्वाब हैं।

हज़रत बाक़ी बिल्लाह रहमतुल्लाह अलैह का जुब्बा शरीफ़ और मीर मुहम्मद नोमान रहमतुल्लाह अलैह की दस्तार मुबारक सैय्यिद मुज़फ़्फ़र हुसैन साहिब पेशाकार कलेकटरी आगरा साकिन मुहल्ला चिड़ीमार टोला के पास नस्लन बाद नस्लिन चली आती है जिसकी ज़ियारत दीगर तबर्रुकात शाह फखरुद्दीन मदारी रहमतुल्लाह अलैह के साथ ग्यारह रबीउल अव्वल को कराई जाती है, मीर मुहम्मद नोमान रहमतुल्लाह अलैह का शजरए नसब मिर्ज़ा हाफ़िज़ क़मरुद्दीन बेग साहिबे सज्जादा नशीन दरगाह अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह के पास मौजूद है, मीर मुहम्मद नोमान रहमतुल्लाह अलैह मिर्ज़ा साहिब के जद्दे मादरी यानी नाना हैं, (बोस्ताने अख्यार, पेज204.207)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर अभी जाना नहीं हुआ, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।

(28) मीर इब्राहीम नक़्शबंदी

आप रहमतुल्लाह अलैह मीर मुहम्मद नोमान नक़्शबंदी मुजद्दिदी रहमतुल्लाह अलैह के फ़र्ज़ंदे अर्जुमंद यानी बेटे, इस्लाम ख़ां बदखशी रहमतुल्लाह अलैह के दामाद हैं, निहायत साहिबे तक़्वा और अहले दिल बुज़ुर्ग थे, शाहंशाह

आलमगीर ने तख़्त नशीन हो कर छः लाख साठ हज़ार रुपये की नक़दो जिन्स आप रहमतुल्लाह अलैह के हमराह हरमैन शरीफैन के मुस्तहिक़्क़ीन के वास्ते रवाना की थी। आप रहमतुल्लाह अलैह ज़ियारत और हज की सआदत से मुशर्रफ़ हो कर वापस तशरीफ़ लाए और 1071 हिजरी ब मुताबिक़ 1660 ईस्वी में आलमे बाला को परवाज़ कर गए यानी आप रहमतुल्लाह अलैह का विसाल हो गया, आप रहमतुल्लाह अलैह की आराम गाह यानी **मज़ार मुबारक** आप रहमतुल्लाह अलैह के वालिद मीर मुहम्मद नोमान रहमतुल्लाह अलैह के दरगाह के पास है यानी नगला धुनी मुत्तसिल सुल्तानगंज। (बोस्ताने अख्यार, पेज38)

(29) **हिम्मत ख़ान**

आप रहमतुल्लाह अलैह का असली नाम मीर ईसा था, नवाब इस्लाम ख़ान (मीर ज़ियाउद्दीन हुसैन) बदखशी अकबराबादी के फ़र्ज़ंद रशीद यानी बेटे हैं, फ़ज़ाइलो ख़साइल और क़ाबिलियत व कमालात का मजमुआ और मरजए सुख़न, फ़हमाने नुक्ता परवाज़ थे, निहायत सलीमुन्नफ्स, नेक ज़ात, करीमुल अख्लाक़, ख़ैर ख्वाहे कायनात, इल्म दोस्त और अरबाबे इल्मो हुनर के क़द्र दान और कमाल परवर थे।

मौजूं तबअ और मीरन तख़ल्लुस था, अरबी, फ़ारसी के इलावा हिन्दी ज़बान में भी ख़ास महारत और सलीक़ा हासिल था।

आलमगीर बादशाह के ज़माने में उमराए शाही के सिल्सिले में मुंसलिक और मुद्दत तक आगरा के सूबादार और दीगर मनासिब जलीला मिसाल के तौर पर क़िलादारी वग़ैरा पर सरफ़राज़ रहे, मगर तमाम उम्र इल्मी मशाग़िल का सिल्सिला जारी रखा। 5 मुहर्रम 1092 हिजरी को अपनी फ़साहतो बलाग़त और नज़मो नसर की बहुत सी यादगारें सफ़्हाए रोज़गार पर छोड़ कर आलमे बक़ा को रवाना हुए यानी विसाल फरमा गये।

मज़ार मुबारक ग़ालिबन मीर मुहम्मद नोमान रहमतुल्लाह अलैह की दरगाह के पास है यानी नगला धुनी मुत्तसिल सुल्तानगंज।

(बोस्ताने अख्यार, पेज249)

(30) अब्दुल्लाह

आप रहमतुल्लाह अलैह ने नामवरी के मुक़ाबला में गुमनामी को पसंद फ़रमाया है, जिसकी वजह से आप रहमतुल्लाह अलैह के नाम का कुछ पता नहीं चल सका।

मज़ार मुबारक चोखे लाल चावल वाले के बाग़ के दर्मियान और आबादी नगला धुनी कच्चे रास्ते पर वाक़ेअ है।

मज़ार मुबारक का तावीज़ संग मर मर का है जिस पर आयतुल कुर्सी और कलिमए तय्यिबा मन्क़ूश है। पुरानी इमारत के कुछ आसार यानी निशानियाँ और पत्थर अब तक मौजूद है।

(बोस्ताने अख्यार, पेज105.106)

फेहरिस्त

आगरा के औलियाए किराम की सीरत की Video देखने और सुनने की लिए इस QR Code को Scan कीजिए ।

Like Share & Subscribe Channel



सर ज़मीने आगरा पर औलिया कितने ही हैं

आओ तुम को मैं बताऊं अस्फ़िया कितने ही हैं
सर ज़मीने आगरा पर औलिया कितने ही हैं
जल्वए नूरे ख़ुदा की हर तरफ़ देखी ज़िया
चार सू रौशन चिराग़े पुर ज़िया कितने ही हैं
गिनते गिनते थक ना जाएं येह तुम्हारी उंगलियां
जा बजा वो बंदगाने किबरिया कितने ही हैं
ख़ानवादए क़ादरिया से मदारी फ़ैज़ तक
हर तरफ़ जलवा कुनां वो बा सफ़ा कितने ही हैं
कादरी चिश्ती सुहर्वर्दी मदारी सिल्सिले
बाग़ ऐसे खिलखिलाते ख़ुशनुमा कितने ही हैं
जाने किस किस दर से मिलती है यहां पर राहतें
रहमतों के दर खुले मरहबा कितने ही हैं
औलिया की महफ़िलों में है सुकूं का तज़्किरा
आशिक़ी के दायरे में आशना कितने ही हैं
उनके दर की ख़ाक सर पर मल रहे हैं बादशाह
उनकी महफ़िल में झुके अहले हया कितने ही हैं
जाहो मन्सब छोड़ बैठे उनके दर की ख़ाक पर
फ़ैज़ लेते हैं यहां अहले दुआ कितने ही हैं
एक तू क्या है तेरी औक़ात क्या बेख़ुद रज़ा
उनकी बज़्मे इश्क़ में नग़मा सरा कितने ही हैं

शायर :वसीम बेख़ुद मांडलवी भीलवाड़ा राजिस्थान